केन्द्रीय विद्यालय संगठन

पुस्तकायन

पढ़ने का सुख अनमोल

उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक विधियां

Purposive Pedagogical Practices

Vol. IV

उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक विधियां

Purposive Pedagogical Practices

Vol. IV

Focus: Library Activities in Kendriya Vidyalayas

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु.), नई दिल्ली
Kendriya Vidyalaya Sangathan (HQ), New Delhi

© Kendriya Vidyalaya Sangathan

उद्देश्यपूर्ण शैक्षिक विधियाँ - Purposive Pedagogical Practices Vol. IV
Special Publication on Library Activities in Kendriya Vidyalayas

---

PATRON
Smt. Nidhi Pandey, Commissioner, KVS

EDITOR- IN- CHIEF
Dr. P. Devakumar
Additional Commissioner (Acad.), KVS (HQ)

EDITOR
Ms. Chandana Mandal, Joint Commissioner (Training), KVS (HQ)

CO-ORDINATOR
Dr. Ritu Pallavi, Assistant Commissioner (Training), KVS (HQ)

EDITORIAL TEAM
Ms. Ratna Pathak, AEO, KVS HQ
Ms. Jhanjha Chakravarty, PGT (English) PM SHRI KV 3 Delhi Cantt. Shift II
Dr. S. Aiman Hashmi, PGT (English) PM SHRI KV 3 Andrews Ganj, Shift I
Mr. Virendra Kumar, TGT (Sanskrit), PM SHRI KV Muzaffar Nagar

DESIGNED BY:
Publication Section

Published by Joint Commissioner (Trg) on behalf of Kendriya Vidyalaya Sangathan.

Readers can send their comments and suggestions through e-mail at:
actrgkvshq@gmail.com

क्रम-सूची ~ Index

S.NO.	NAME OF THE ARTICLE	NAME OF THE AUTHOR	NAME OF THE INSTITUTION	REGION	Pg. No.
1	पुस्तकालयों के माध्यम से विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा कौशल का विकास	प्रमोद कुमार मिश्रा	पीएम श्री के.वि. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान सिमरोल इंदौर	भोपाल	10
2	Gift a Book, Get a Friend: A Community Outreach Programme	S.L. Faisal	PM SHRI KV Pattom	Ernakulam	13
3	Library Clinic: Treatment of Books	Reshma V	PM SHRI KV Dharamapuri	Chennai	15
4	प्राथमिक विद्यालय में पुस्तकालय की भूमिका	सत्यवान रिछारिया	के.वि.सी.आर.पी.एफ. बंगरसिया	भोपाल	17
5	Read, Reflect and Rise: Promoting a Culture of Reading	Sriparvathi L	PM SHRI KV AFS Yelahanka	Bengaluru	22
6	Kindling the Love for Reading	Yasmeen Jamil	PM SHRI KV Masjid Moth	Delhi	24
7	पुस्तकालय प्रबंधन में नवीन कार्यक्रम	वसीम राजा	के.वि. इफको आँवला बरेली	लखनऊ	28
8	Library as a Resource Centre for Learning	Sunil Kumar Kurre	PM SHRI KV Vyasnagar, Jajpur Road	Bhubaneshwar	29
9	Knowledge Weekly: A Flipbook to Promote Literary Skills	Sreena P	PM SHRI KV SAP Thiruvananthapuram	Ernakulam	32
10	सीखने की अनूठी जगह : पुस्तकालय	सतीश श्रीवास	पीएम श्री के.वि. टैगोर गार्डन	दिल्ली	33
11	Delving into Literature: Review of 5 Noteworthy Library Books	Dipanwita Mandal	PM SHRI KV Kutra	Bhubaneshwar	38
12	Spotlight on a Library: The Hebbal Hub of Books	Prathima	PM SHRI KV Hebbal	Bengaluru	42
13	पुस्तकों का अनमोल खज़ाना: बाल पुस्तकालय की विशिष्ट संग्रहणीय कृतियाँ	गिरीजा शंकर	केन्द्रीय विद्यालय एएमसी, पाली १, तोपखाना बाज़ार	लखनऊ	48
14	An Initiative for a Student-Friendly Modified Search Engine	Arindam Guha Biswas	PM SHRI KV Laitkor Peak Shillong	Silchar	51
15	Comprehensive Reading Programme	Nandan Kumar Dubey	PM SHRI KV Madhopur (Deoghar)	Ranchi	53
16	बढ़ने के लिए पढ़ना	कृष्णा रोशन	पीएम श्री के.वि बीएसएफ कैंप , छावला,	दिल्ली	56
17	Inspire to Aspire: A Biography Reading Programme	Anitha P G	PM SHRI KV Ottapalam	Ernakulam	57
18	पुस्तकालय प्रबंधन में नवाचार कार्यक्रम	मोहिनी प्रजापति	पीएम श्री के.वि. महोबा (उ०प्र.)	आगरा	59
19	वेब-आधारित अनुप्रयोगों का निर्माण और उपयोगिताएँ	डॉ राजेश शर्मा	के.वि.सं आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	मुंबई	61
20	पुस्तकालयाध्यक्ष का अनोखा कार्य	डी.के. सिंह	के.वि.सं आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	मैसूर	64
21	Pioneering Role of School Librarian in KVS	Biswa Bag	Zonal Institute of Education & Training	Bhubaneshwar	68
22	पुस्तकालयाध्यक्ष : एक विशेष भूमिका	सुनील कुमार	के.वि.सं आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	चंडीगढ़	71
23	पठन अभिरुचि बढ़ाने हेतु अभिनव प्रयोग	डॉ योगेश कुमार जैन	के.वि.सं आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान	ग्वालियर	73

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2023 में निहित भावना के अनुरूप, आज के विद्यालय ज्ञान के पारंपरिक स्वरूप से आगे बढ़कर समग्र विकास के केंद्र बन रहे हैं। केन्द्रीय विद्यालय संगठन में हमारा निरंतर प्रयास है कि शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित न रहे, अपितु विद्यालय का प्रत्येक आयाम—चाहे वह खेल का मैदान हो, प्रयोगशाला हो या पुस्तकालय—विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यार्थियों को सक्षम, जिज्ञासु, नैतिक मूल्यों से युक्त एवं वैश्विक दृष्टिकोण वाला नागरिक बनाना हमारा ध्येय है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और सार्थक है।

एक समृद्ध पुस्तकालय केवल पुस्तकों का भंडार नहीं होता, बल्कि वह विचारों का संगम, कल्पनाओं का विस्तार और ज्ञान का जीवंत स्रोत होता है। जब विद्यार्थी उत्कृष्ट साहित्य, प्रेरक जीवनियाँ, वैज्ञानिक अन्वेषण और विविध विषयों की गहराइयों से परिचित होते हैं, तो न केवल उनका बौद्धिक विकास होता है, अपितु उनके व्यक्तित्व में भी नयी ऊँचाइयाँ जुड़ती हैं।

केन्द्रीय विद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है कि वे पुस्तकालय को विद्यालय के बौद्धिक, सांस्कृतिक और रचनात्मक जीवन का केंद्र बना रहे हैं। विद्यार्थियों को पठन-संस्कृति से जोड़ने, उनमें जिज्ञासा, चिंतन-मनन एवं विचार-विमर्श की क्षमता विकसित करने में उनका योगदान मूल्यवान है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि विद्यार्थी इस ज्ञान-संपदा का उपयोग केवल शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए नहीं, अपितु अपने जीवन के मार्गदर्शन और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने हेतु भी करेंगे। वे महान विभूतियों के जीवन और कृतियों से प्रेरणा प्राप्त कर राष्ट्रनिर्माण की दिशा में सार्थक भूमिका निभाएँगे।

यह विशेष प्रकाशन देश भर के केन्द्रीय विद्यालयों में पुस्तकालयों के माध्यम से किए जा रहे नवाचारों, अनुभवों और उत्कृष्ट प्रयासों का संकलन है। मैं आशा करती हूँ कि यह संकलन विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और पुस्तकालय कर्मियों, सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा। निस्संदेह किसी भी अन्य उपलब्धि के इतर 'पढ़ने का सुख अनमोल है।'

इस प्रयास की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

निधि पांडे
आयुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन

Message

A school finds its soul not only in classrooms or assemblies, but in the holy precincts of its library — a place where thought deepens, language unfolds, and silence finds voice. Here, amid the gentle turning of pages, young learners discover the joy of words and the power of ideas.

This magazine honours the quiet guardians of that world — our librarians — who, with care and dedication, open doorways to understanding and wonder. In their hands, a library becomes more than a room; it becomes a landscape where questions grow and perspectives widen.

In an age of haste and fleeting images, the deliberate pace of reading offers something rare — depth. Each book holds a mirror, a window, or sometimes a map, guiding the reader to unfamiliar places within and beyond themselves.

This publication is both a celebration and a call— a celebration of those who nurture a reading culture in our schools, and a call to remember that the strength of education lies not only in syllabi, but in the freedom to explore, to imagine, and to think critically.

I extend my appreciation to all contributors of the magazine and hope that these pages inspire many more to discover the quiet magic that lives between the covers of a well-loved book.

Dr. P. Devakumar
Additional Commissioner (Acad)
Kendriya Vidyalaya Sangathan

Editorial

In the everyday bustle of our Kendriya Vidyalayas and ZIETs, something remarkable happens when a student finds the right book. That moment—when eyes widen and time slows—is what our librarians work for. They don't just manage collections; they create spaces where curiosity thrives. We've seen it happen: a reluctant reader discovers a story that speaks volumes to him, a teacher finds a resource that transforms her lesson, a shy child makes the library his haven. These small victories matter more than circulation statistics or perfectly arranged shelves.

Our librarians have moved beyond the old notions of libraries as quiet storage rooms. They've reimagined these spaces as workshops of thought, where students debate ideas, create projects, and sometimes simply sit in the company of books that understand them better than anyone else might.

Books, as gateways to countless worlds, hold the power to shape minds and stir souls. Libraries, their sanctuaries, are not just spaces of silence but of transformation—where stories breathe, dreams germinate, and knowledge takes root. At the heart of these vibrant hubs are our librarians, the unsung torchbearers of reading culture. With passion and purpose, they are reimagining the library as a dynamic space of inquiry, dialogue, and discovery.

This compilation brings to light the remarkable efforts of these knowledge stewards—initiatives that blend tradition with technology, heritage with innovation, and structure with creativity. From reading corners that echo laughter to digital catalogues that extend learning beyond walls, each story here is a testament to what a library can become when guided by vision.

May this collection inspire schools across the nation to view libraries not as rooms of books, but as realms of wonder. Let us continue to build not only institutions of learning, but treasure troves of thought. And in doing so, may we never forget the quiet magic of the library—and the librarian who keeps its flame alive.

Chandana Mandal
Joint Commissioner (Training)
Kendriya Vidyalaya Sangathan

1

पुस्तकालयों के माध्यम से विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा कौशल का विकास

कहावत है "Well begun is half done" कॉविड-19 में सीमित ऑनलाइन गतिविधियों में भी सुनियोजित ढंग से जुलाई 2020 में केंद्रीय विद्यालय बैरागढ़ तथा केंद्रीय विद्यालय महू से 40- 40 विद्यार्थियों को इस परियोजना कार्य में सम्मिलित कर शनिवार, रविवार के दिन क्रियान्वयन का चयन किया। इसमें मैंने अपने वरिष्ठ जनों सहकर्मियों के साथ अभिभावकों का तथा विद्यार्थियों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इस परियोजना कार्य की तैयारी के दो मुख्य भाग थे।

पहला विद्यार्थियों का चयन दूसरा गतिविधियों का निर्धारण एवं उनके कार्यान्वयन का प्रारूप

गूगल मीट पर एक बार में अधिकतम 100 प्रतिभागी शामिल हो सकते थे हमने कक्षा अध्यापकों के परामर्श से 80 विद्यार्थियों को चयनित करने का लक्ष्य रखा ताकि हमारी गतिविधियों में कुछ अभिभावक एवं अतिथि भी शामिल किए जा सके। "निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।" भारतेंदु हरिश्चंद्र जी के यह कालजयी शब्द इस परियोजना कार्य की उपयोगिता को सिद्ध करते हैं।

परियोजना के क्रियान्वयन के लिए मैंने कुछ गतिविधियों का चयन किया था। क्रियान्वयन में मुख्य रूप से लेखन तथा उच्चारण दोनों पर ही ध्यान देना आवश्यक था। हिंदी भाषा के शब्दों को बोलने में होंठ एवं जीभ के संचालन का विशिष्ट स्थान है। अतः विद्यार्थियों के साथ परस्पर संवाद भी आवश्यक था। लेखन एवं संवाद दोनों को समान रूप से स्थान देने के लिए पहले विद्यार्थियों से शनिवार को लिखित में फिर रविवार को गूगल मीट के माध्यम से उसकी व्यक्तिगत प्रस्तुति करवाई। इस प्रकार प्रतिभागियों ने कई बार अपने साथियों की प्रस्तुति देखकर भी अपनी गलतियों को सुधारा स्व प्रस्तुति के कारण विद्यार्थी अधिक लाभान्वित हुए।

1. प्रथम गतिविधि में हर प्रतिभागी को लगभग 50 शब्दों में स्वयं का परिचय, नाम का अर्थ एवं व्याख्या लिखकर भेजनी थी उसे सबके सामने अपने शब्दों में व्यक्त भी करना था।

परिणाम स्वरूप विद्यार्थी अपने नाम का सही उच्चारण सभी को बताने में समर्थ हुआ। नाम में शामिल क्लिष्ट और अतिक्लिष्ट शब्दों को सही रूप में बोलना और लिखना सीखा।

2. दूसरी गतिविधि में सामान्य परिचय से अलग प्रत्येक प्रतिभागी को अपने बारे में पांच वाक्य या सीमित शब्दों में अपनी कुछ विशेषताएं जो स्वयं को दूसरों से भिन्न करती हो, लिखनी और बोलनी थी।

इस गतिविधि के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों के शब्दकोश में वृद्धि हुई। स्वयं का विश्लेषण करना सीखा अपनी विशेषताओं का वर्णन करने के लिए नए शब्द खोजने का प्रयास करना, उन्हें लिखना बोलना सीखा।

3. तीसरी गतिविधि- मुंशी प्रेमचंद की 'ईदगाह' कहानी का वाचन जोकि इस परियोजना में शामिल बच्चों के हम उम्र एक बच्चे की कहानी है। विद्यार्थियों ने काफी उत्साह से भाग लिया और शब्दों के पीछे की संवेदना से परिचित हुए कहानी पठन में अल्प विराम , पूर्ण विराम आदि चिह्नों पर ध्यान देना सीखा, प्रस्तुतीकरण के समय पालन भी किया।

4. चतुर्थ गतिविधि - दशहरा शब्द एक व्यापक शब्द है इसको समझ कर इस विषय पर 100 शब्द का लेखन एवं इसके किसी भी पक्ष पर अपने विचार व्यक्त करना।

इस गतिविधि में विद्यार्थियों ने इस शब्द की उत्पत्ति ,संधि विच्छेद, शुद्धोच्चारण तथा किसी भी विषय को सीमित शब्दों में किस तरह से व्यक्त करना है यह भी स्वयं तथा एक दूसरे के रचित आलेखों के माध्यम से समझा।

5. पांचवी गतिविधि में आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होने वाले हिंदी शब्दों का संग्रह तथा उन शब्दों को सही ढंग से बोलना और लिखना सीखना था।

यह सभी के लिए एक बहुत सीखने योग्य गतिविधि थी साधारण बोलचाल में कई शब्द गलत तरीके से उच्चरित होते हैं जैसे मैं/ में जीभ/जीव आदि इसमें मात्राओं एवं उच्चारण की अनेक गलतियां समझ आई एवं सुधार हुआ।

6. छठी गतिविधि में सभी प्रतिभागियों को एक बड़ी प्रसिद्ध हिंदी कहानी शिकारी और कबूतर का वीडियो भेजा गया इस प्रचलित कहानी के मूल भाव को परिवर्तित किए बिना उसे अपने शब्दों में लिखना था। हिंदी लेखन, शब्द संग्रह ,विचारों का सही प्रस्तुतीकरण यह सभी कुछ बच्चों ने स्वयं प्रयोग के द्वारा सीखा।

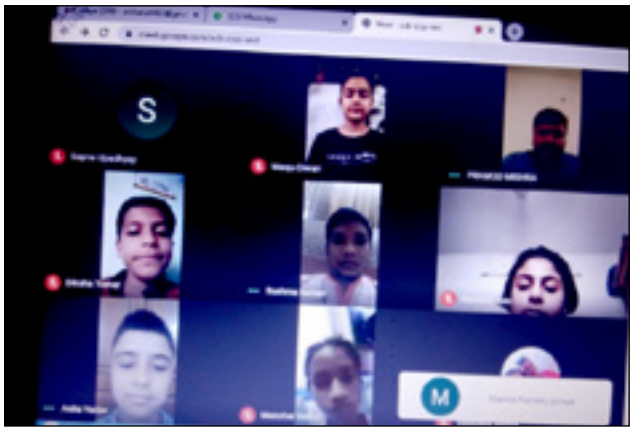

7. सातवीं गतिविधि में हिंदी नारा लेखन विषय सुरक्षित सड़कें, सुरक्षित भारत। प्रतिभागियों की रचनात्मकता को बढ़ाने के लिए सभी को एक समान विषय पर ही एक-एक नारा लिखने का कार्य या गया। नारा लेखन में समाहित भाषा ज्ञान, शब्दों का सही प्रयोग , काव्य रचनात्मकता के साथ-साथ स्वयं रचित एवं दूसरों के लिखे हुए नारों के द्वारा भी प्रतिभागियों ने एक दूसरे से सीखा और समझा।

8. आठवीं गतिविधि "आपका अपना 1 मिनट"इसके अंतर्गत प्रतिभागियों को जिस भी विषय पर बोलना चाहे 1 मिनट तक बोलने की स्वतंत्रता दी गई , विद्यार्थियों ने स्वयं के विवेक से विषय चुना। स्वयं की रचनात्मकता का उपयोग करते हुए आलेख लिखा एवं मंच पर प्रस्तुतीकरण से आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ।

9. नौवीं गतिविधि आपसी बातचीत पर आधारित थी। अभिवादन के साथ ही हम जिस व्यक्ति से मिल रहे हैं उसके अनुसार एक छोटा सा वार्तालाप संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना था। वार्तालाप के लिए दूसरे व्यक्तित्व का निर्धारण सभी को स्वयं करना था एवं उसके अनुसार ही आपसी वार्तालाप को लिखित में तैयार कर प्रस्तुत करना था। विद्यार्थियों ने दूसरे व्यक्तित्व के रूप में मित्रों, शिक्षकों, माता-पिता का चयन कर सुंदर तरीके से लेखन की परिकल्पना की।

इस परियोजना के अंतिम गतिविधि के रूप में दसवीं गतिविधि आलेख लेखन शिक्षक दिवस पर आधारित रही। शिक्षक दिवस का महत्व एवं मनाने का कारण तथा अपने प्रिय शिक्षक का चरित्र चित्रण इन दो विषयों पर विद्यार्थियों की रचनात्मकता एवं क्रियाशीलता दिखाई दी नए-नए शब्दों का प्रयोग अपने आलेख में किया। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास तथा भाषा के प्रति रुझान भी क्रियाकलाप में दिख रहा था।

भाषा कौशल के विकास में पुस्तकालय का उपयोग कोई नई अवधारणा नहीं है हमेशा से विद्यार्थियों को पुस्तकालय में पुस्तक पढ़ने का अभ्यास है एवं पठन की भाषा के विकास का पहला चरण है किंतु यदि जमीनी स्तर पर देखें तो बच्चे किताब पढ़ कर उसे कविता कहानी या विषय के संदर्भ को तो समझ लेते हैं और शब्दों के सही उच्चारण तथा सही लेखन पर ध्यान नहीं देते कालांतर में यही कमी उनके बोलने और लिखने में दिखाई देने लगती है विद्यार्थियों की इसी कमी को पहचान कर इसे दूर करने का प्रयास करना ही इस परियोजना कार्य का मुख्य लक्ष्य था। विद्यार्थियों में मुख्य रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों में सुधार देखा गया।

आम बोलचाल के शब्दों के उच्चारण दोष में सुधार हुआ। शब्दों को सही तरीके से उच्चारण करना सीखा। छोटी और बड़ी मात्राओं का अंतर विद्यार्थियों ने समझा। किसी शब्द को सुनकर एवं बोलकर उसमें लगने वाली सही मात्रा को पहचानना सीखा। श और स का अंतर, ब और व का अंतर इस तरह के और अन्य उच्चारण दोष भी दूर हुए। भाषायी सुधार के साथ साथ विद्यार्थियों के शब्द भंडार में भी बहुत वृद्धि हुई। स्व लेखन की प्रवृत्ति का विकास हुआ। किसी भी गतिविधि में पहले उसको लिखना फिर प्रस्तुत करना इससे मात्राओं एवं उच्चारण की शुद्धता के साथ आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई वीडियो प्रस्तुतीकरण से मंच प्रस्तुति के अनुभव में वृद्धि हुई दो अलग-अलग केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थी परियोजना में होने के कारण आपसे सामंजस्य की भावना पैदा हुई।

पुस्तकालय के माध्यम से न सिर्फ साधारण शिक्षक अपितु विद्यार्थियों में कुछ अन्य कौशल का भी विकास किया जा सकता है यह इस परियोजना कार्य की मूल भावना थी भाषा कौशल के विकास के रूप में यह दिशा में पहला प्रयास था जिसमें हम तीनों पुस्तकालय अध्यक्षों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने काफी उत्साह से भाग लिया एवं सभी ने काफी कुछ सीखा विद्यार्थियों के भाषा कौशल विकास की दिशा में ऐसी नवीन अवधारणाओं के विकास का प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

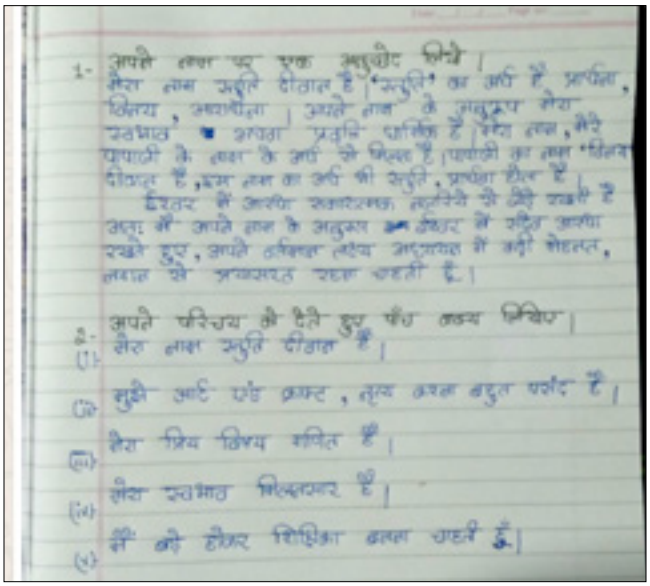

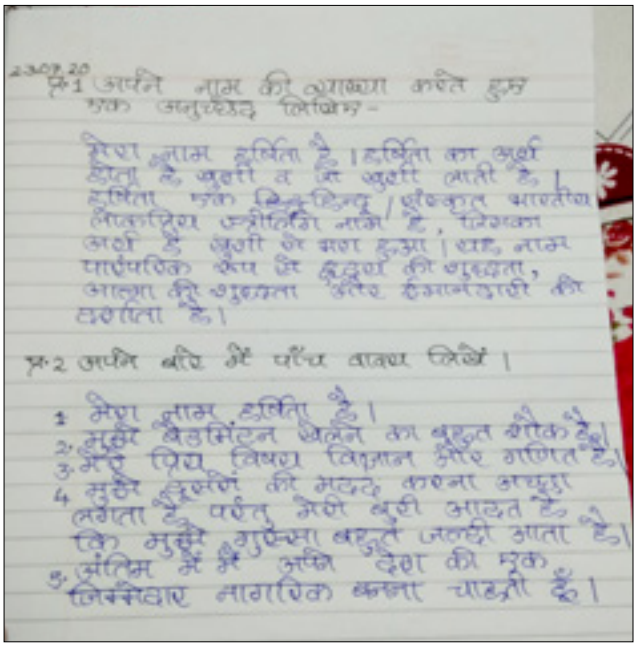

प्रमोद कुमार मिश्रा
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान सिमरोल इंदौर

"किताब, कलम, बच्चा और शिक्षक इस संसार को बदल सकते हैं, बस हौसला बुलंद होना चाहिए।"

~डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

2

Gift a Book, Get a Friend
A Community Outreach Programme

"Books make great gifts because they have whole worlds inside of them. And it's much cheaper to buy somebody a book than to buy them the whole world!" — Neil Gaiman.

Making friends by gifting books and sharing the joy of reading has become one of the most beautiful and heartwarming annual celebrations at Kendriya Vidyalaya Pattom. Every year, as the librarian and coordinator of this programme, I find myself humbled and inspired by how our school connects with society, especially by supporting the development of libraries in nearby, less privileged government schools. It is a small but powerful way of opening doors to the wonderful world of stories, ideas, and imagination for many children.

When the date for the 'Gift a Book, Get a Friend' (GBGF) community outreach programme is finalised, the entire school shifts into campaign mode. Partner schools are chosen thoughtfully, based on their reading needs and interests. I visit each selected school to understand the number of students, their grade levels, reading preferences, the languages they are comfortable in, and their financial

backgrounds so that we can create thoughtful, meaningful gifts just for them.

Our enthusiastic Readers' Club members kick off the campaign with an announcement in the morning assembly. They visit every class to personally reach out to each student and staff member, requesting they donate good-quality new or used books that support pleasure reading. Stationery items like notebooks, pens, pencils, colouring materials, and instrument boxes are also collected. By the end of the campaign, we are surrounded by boxes brimming with books and supplies, all lovingly packed for our partner schools.

Simultaneously, another student team visits the partner school to assess their library. We see whether the space needs organizing, or perhaps even renovating. Then, we roll up our sleeves and work—painting the walls, putting up beautiful posters and inspirational quotes, and arranging books by subject. We collaborate with the children of the school, and the space transformation becomes a shared joy.

When the day of the event arrives, a team of Readers' Club members travels to the partner school carrying all the gifts, and hearts full of excitement. The programme begins with a simple formal session, where our Principal presents a large bundle of carefully selected books to the school's library. Students from both schools inaugurated the renovated space. It is a magical moment when we see the wide-eyed joy of children flipping through the pages, already lost in new adventures.

Every student and staff member in the partner school receives their book packet. In some instances, the kindness is returned—our students, too, are gifted something in return. The celebration continues with a cultural fiesta showcasing talents and traditions from both schools. One of the highlights is a guided tour of the school campus, allowing our students to explore every corner and learn how others study, play, and grow.

All these activities are planned to foster empathy, sharing, and friendship. For our students at KV Pattom, this is not just about giving books—it's about understanding different ways of life, recognising challenges others face, and realising how we can make a difference.

The journey of GBGF began on December 6, 2013, at Government Upper Primary School, Palkulangara. Our ninth and most recent edition was held at SMV HS, Thampanoor on August 2, 2023. Over the years, we have reached over 4,000 children, donated over 5,000 books, and shared many school supplies. These partner schools remain close to our hearts, and we continue collaborating with them through various engagements.

The GBGF initiative has also caught the attention of the media, as it is featured in newspapers and on visual and online platforms. It is now seen as a replicable model that promotes reading, sharing, and community bonding.

As the librarian of this incredible school, I look forward to this programme every year with childlike excitement. The sparkle in the children's eyes, the friendships formed, the books exchanged, and the memories created make GBGF a celebration of the very best in humanity.

S.L. Faisal
TGT Librarian
KV Pattom, Thiruvananthpuram

"A library is a friend to the lonely, a companion to the curious, and a gateway to a thousand adventures."

~Ruskin Bond

3

Library Clinic: Treatment of Books

A Unique Project

In today's digital age, where screens often dominate our attention, I still find that the joy of holding a physical book and flipping through its pages remains unmatched. Imagine the disappointment of discovering a beloved book torn or damaged. But what if that disappointment could be transformed into an opportunity for creativity and care?

That's precisely what happened when a group of enthusiastic bibliophiles from **Class 7** and I embarked on a unique project—we set up a **Library Clinic**. I guided a team of 'chief doctors' and 'nurses' who reused and repaired torn books using cello tape and gum. What began as a simple effort to fix broken spines and tattered pages soon blossomed into a heartfelt journey to **restore the magic of storytelling**.

Vision

Under my guidance, many students assumed the roles of doctors and nurses. They learned practical skills like repairing books and embraced the **value of caring** for these shared resources. Each book became a **canvas for their creativity** and a **testament to their dedication**.

Learning Process

The entire experience was rich with **laughter, teamwork, and learning**. I watched as the children carefully applied

small pieces of transparent cello tape to hold pages together, ensuring every repair was as **seamless as it was sturdy**. For more complicated cases, they used gum to **bind torn covers** and **reinforce edges**, breathing new life into nearly discarded books.

Learning Outcomes

This project instilled a strong **sense of responsibility** in the students. We discussed the importance of **gentle handling**, **proper storage**, and respecting the **longevity of books**. In just 50 minutes, we successfully restored **68 books**! The experience opened up conversations about caring for shared property and finding joy in simple acts of preservation.

Achievement

Beyond the technical skills, this initiative sparked **creativity, pride, and ownership** in the students. Watching them proudly showcase their restored books to peers and teachers was incredibly fulfilling. They knew they had helped **preserve literary treasures** for future readers, inspiring others to appreciate books more deeply.

A Meaningful Journey

What began as an effort to mend torn pages became a **meaningful journey of discovery and creativity**. My students learned that with patience and care, even the most damaged books can become **cherished stories** again.

This initiative brought damaged books back to life, nurturing **a love for literature** and a **deeper respect for the written word**. It was a powerful reminder that sometimes, the simplest acts of care and creativity can make a lasting difference.

Reshma V
TGT Librarian
KV Dharamapuri

"Libraries are the most democratic space in a community—open to all, empowering to all."

~Shashi Tharoor

4

प्राथमिक विद्यालय में पुस्तकालय की भूमिका

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली की भूमिका प्राथमिक शिक्षा को एक प्रभावी और प्रगतिशील वातावरण के माध्यम से बच्चे के बौद्धिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना है।बच्चों को स्वतंत्र रूप से सीखने का अवसर देने से उनकी रचनात्मकता और जिज्ञासा को बढ़ावा मिलता है। वे अपने अनुभवों और गतिविधियों के माध्यम से दुनिया को समझने की कोशिश करते हैं और हर उस चीज़ से जुड़ना चाहते हैं जो उन्हें आकर्षित करती है। बच्चों की जिज्ञासा उन्हें नई और अनोखी चीजों के बारे में जानने के लिए प्रेरित करती है। वे चीजों की शक्ल, आकार और प्रकृति के बारे में उत्सुक होते हैं। लेकिन जब हम उनकी जिज्ञासा को अनदेखा करते हैं, तो यह उनकी सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। अक्सर ऐसा हमारी अपनी इस समझ की कमी के कारण होता है कि बच्चों को वास्तव में क्या जानने की जरूरत है ? एक अच्छी लाइब्रेरी एक बच्चे को एक अच्छा इंसान बनने के लिए आवश्यक सब कुछ सिखा सकती है। यह एक ऐसी जगह है जहां बच्चे सीखते हैं, एक-दूसरे की मदद करते हैं और अपनी रचनात्मकता को विकसित करते हैं। उन्हें अपनी पसंद की चीजें बनाने की आजादी मिलती है और वे अपने अनुभवों और पढ़ी गई कहानियों से नई कहानियां गढ़ते हैं। यह लाइब्रेरी उनके लिए एक ऐसा मंच है जहां वे अपने आसपास के अनुभवों को कहानियों में बदल सकते हैं।

इसके परिपालन में **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ) 2023**, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के आधार पर बनाई गई है, ने पुस्तकालयों और पुस्तकों के महत्व पर जोर दिया है, विशेषकर इसमें पढ़ने के कल्चर को विकसित करने पर जोर दिया गया है।

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2017 के निष्कर्षों से स्पष्ट रूप से पता चला है कि जिन स्कूली बच्चों की स्कूल के पुस्तकालय तक पहुंच है और जो कहानी की किताबें पढ़ते हैं, उनमें सीखने का स्तर अधिक होता है।

पढ़ना बच्चो को पाठ को समझने और व्याख्या करने जैसे मूलभूत साक्षरता कौशल विकसित करने में मदद करता है। यह भाषा और लेखन कौशल पर नियंत्रण विकसित करने की दिशा में एक कदम है।

प्राथमिक कक्षा पुस्तकालय केवल एक पुस्तकालय नहीं है, बल्कि यह एक खोज और आश्चर्य की दुनिया है। यह एक ऐसा स्थान है जहां हमारे छात्र अपने शैक्षिक विकास में पुस्तकों के महत्व को सीखते हैं। पुस्तकालय की नियमित

यात्राओं का एक परिणाम यह है कि वे धीरे-धीरे पुस्तकों से मिलने वाले आनंद और प्रेरणा को समझने लगते हैं। बच्चो के द्वारा धीरे –धीरे , अद्भुत और रोमांचक कहानियां पढ़ी और साझा की जाती हैं। **प्राथमिक कक्षा पुस्तकालय** सीखने और सोचने के स्थान हैं, और पढ़ने के आनंद को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्राथमिक कक्षा पुस्तकालय और उनसे संबंधित गतिविधियां

प्राथमिक शिक्षा में पुस्तकालय को कक्षा गतिविधि के रूप में शामिल करना इसका प्रमुख उद्देश्य हैं I

मेरे द्वारा की जाने वाली पुस्तकालय गतिविधियाँ -बच्चो को सीखने के लिए तैयार करना।

गतिविधि 1: कहानी सुनाना

कहानी मेरे या अन्य शिक्षक अथवा किसी छात्र द्वारा कक्षा को सुनाई जाती है।

परिणाम: यह आगे की पढ़ाई के लिए प्रेरणा प्रदान करता है, क्योंकि कहानीकार कहानी के स्रोत, लेखक का उल्लेख करता है, या किसी अन्य तरीके से आगे की गतिविधि के लिए संकेत देता है।

गतिविधि 2: ज़ोर से पढ़ना

यह कविताओं की लय और 'इयर अपील' को प्रस्तुत करने में प्रभावी है।

परिणाम: यह छात्रों के पढ़ने और संचार कौशल में सुधार करता है और उन्हें कविताओं या कहानियों को ज़ोर से पढ़ने के लिए आकर्षित करता है।

गतिविधि 3: पुस्तक वार्ता या पुस्तक चर्चा

एक चुनी गई, पूरी कहानी एक पुस्तक से ली जाती है, जिसके साथ संबंधित पुस्तकों के सुझाव भी दिए जाते हैं और चर्चा की जाती है।

परिणाम: बच्चे उस विषय क्षेत्र पर पुस्तक और अन्य सूचना स्रोतों के बारे में गहराई से जानकारी प्राप्त करते हैं।

गतिविधि 4: पुस्तक समीक्षाएँ और पुस्तक घोषणाएँ

छात्र कक्षा पुस्तकालय से जारी की गई पुस्तकों के बारे में पुस्तक समीक्षाएँ लिखते हैं और उनमे से कुछ अपने पुस्तकालय नोटबुक में दर्ज करते हैं।

परिणाम: लेखन और विश्लेषणात्मक कौशल का विकास।

गतिविधि 5: बुलेटिन बोर्ड्स

एक "कक्षा पुस्तकालय बुलेटिन बोर्ड" प्राथमिक अनुभाग में विशेष रूप से कक्षा पुस्तकालयों के लिए रखा जाता है। इस पर पुस्तकालय से संबधित विभिन्न गतिविधि की जानकारी शामिल होती है:

परिणाम: कक्षा पुस्तकालय गतिविधियों के लिए प्रचार प्रदान करता है। छात्रों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा प्रदर्शित करने के लिए एक स्थान मिलता है।

गतिविधि 6: बच्चों की पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के लिए खुली अलमारी

इसके अंतर्गत बच्चों की पत्रिकाएँ (जैसे चंपक, टिंकल आदि) एवं बच्चों के लिए समाचार पत्र या समाचार पत्रों की प्रतियाँ प्राथमिक विभाग में एक खुली अलमारी में रखी जाती हैं।

परिणाम: पढ़ने की आदत बढ़ती है और साझा करने की आदत को बढ़ावा मिलता है।

गतिविधि 7: पढ़ने के कार्यक्रम

- पढ़ने के दिन

- पढ़ने का सप्ताह

- पढ़ी हुई किताबे/मैगज़ीन के बारे में बातचीत और नाटकीय प्रस्तुतियाँ

- पढ़ने का लक्ष्य

परिणाम: छात्र का पढ़ने के प्रति अधिक झुकाव बढ़ता हैं और सह पाठ्यक्रम गतिविधियां कार्यक्रमों में भाग लेने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। सामान्य स्कूल समय के दौरान नियमित पाठ्यक्रम को बढ़ाना और समृद्ध करना इनका उद्देश्य हैं।

गतिविधि 8: प्रतियोगिताएँ और पुरस्कार

इस गतिविधि में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, ये प्रतियोगिताएँ स्कूल के सीसीए कार्यक्रम के हिस्से के रूप में या अलग-अलग कक्षाओं में आयोजित की जाती हैं:

पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता, पुस्तक खेल और साहित्यिक क्विज़,पुस्तकालय थीम पर बुकमार्क, पुस्तक जैकेट और पोस्टर डिज़ाइन करना,पढ़ने की प्रतियोगिता,कहानी सुनाने की प्रतियोगिता, समाचार पढ़ने की प्रतियोगिता, पसंदीदा पुस्तक प्रतियोगिता I

परिणाम: छात्रों और शिक्षकों को अधिक पुस्तकालय और पढ़ने से संबंधित गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरणा मिलती है।

गतिविधि 9: प्रदर्शनियाँ और प्रदर्शन

इस गतिविधि में पुस्तकालय में विभिन्न प्रकार की प्रदर्शनियाँ और प्रदर्शन आयोजित किए जा सकते हैं, इन प्रदर्शनियों और प्रदर्शनों का उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों को पुस्तकालय की विभिन्न गतिविधियों और संसाधनों से अवगत कराना है, साथ ही उन्हें पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

परिणाम: महान व्यक्तित्व और महत्वपूर्ण घटनाओं को याद रखा जा सकता है और उनके बारे में पढ़ने से छात्रों को अच्छी तरह से जानकारी मिलती है। यह गतिविधि छात्रों को महान व्यक्तित्वों और ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में जानने और समझने का अवसर प्रदान करती है, जिससे वे अधिक जानकार और संवेदनशील बनते हैं।

गतिविधि 10: भ्रमण

मुख्य पुस्तकालय का भ्रमण

परिणाम: बच्चों को स्थानीय पुस्तकालयों और संस्थानों में रखे गए संसाधनों के बारे में जानकारी मिलती है। इस गतिविधि द्वारा बच्चों को स्थानीय पुस्तकालय के संसाधनों और गतिविधियों से परिचित होने तथा उन्हें जानने और समझने का अवसर मिलता है।

गतिविधि 11: ऑनलाइन सूचना स्रोत, उनकी खोज और मूल्यांकन

छात्र अब इंटरनेट के माध्यम से बड़ी मात्रा में ऑनलाइन जानकारी के संपर्क में हैं। आवश्यक जानकारी ढूंढना एक कौशल है जिसे सिखाने की आवश्यकता है। इस गतिविधि में छात्रों को ऑनलाइन सूचना स्रोतों के बारे में जानकारी दी जाती है I इस गतिविधि का उद्देश्य छात्रों को ऑनलाइन सूचना स्रोतों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने और उनका मूल्यांकन करने के लिए तैयार किया जाता है।

परिणाम: ऑनलाइन सूचना स्रोतों और उनके महत्वपूर्ण मूल्यांकन के बारे में ज्ञान। इस गतिविधि के माध्यम से छात्रों को ऑनलाइन सूचना स्रोतों के बारे में जानकारी मिलती है और वे इंटरनेट और प्रिंटेड संसाधनों का उपयोग करके जानकारी ढूंढने में सक्षम होते हैं।

गतिविधि 12: सूचना साक्षरता कौशल (प्राथमिक वर्ग के बच्चों के लिए)

सूचना साक्षरता का अर्थ है प्रासंगिक जानकारी का पता लगाना I इस गतिविधि का उद्देश्य प्राथमिक वर्ग के बच्चों को सूचना साक्षरता कौशल सिखाना है, जिसमें जानकारी का पता लगाना, मूल्यांकन करना, विश्लेषण करना और उपयोग करना शामिल है। यह गतिविधि बच्चों को पुस्तकालय, ऑनलाइन संसाधनों और अन्य सूचना स्रोतों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए तैयार करती है।

परिणाम: इस गतिविधि के माध्यम से छात्र सूचना साक्षरता कौशल प्राप्त करते हैं और मुख्य पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

गतिविधि 13: कक्षा पुस्तकालय समाचार पत्र I

इस गतिविधि के माध्यम से छात्रों को पुस्तकालय के बारे में जागरूक करना और उन्हें पुस्तकालय के संसाधनों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

परिणाम: पुस्तकालय का प्रचार और रचनात्मक शिक्षा। यह गतिविधि पुस्तकालय को अधिक आकर्षक बनाती है और छात्रों को रचनात्मक और मजेदार तरीके से सीखने में मदद करती है।

निष्कर्ष :- प्राथमिक पुस्तकालय और पुस्तकें बच्चों के विकास के लिए आवश्यक हैं। एक सुव्यवस्थित कक्षा पुस्तकालय कार्यक्रम और रचनात्मक पुस्तकालय गतिविधियाँ छात्रों को स्वतंत्र रूप से सीखने और आजीवन सीखने वाले बनाने में मदद करती हैं। एक छात्र को अपनी बढ़ती हुई उम्र में पुस्तकों और पुस्तकालयों की आवश्यकता होती है। यह उनके पढ़ने के अनुभवों को समृद्ध करता है और उन्हें स्वतंत्र रूप से सीखने के कौशल विकसित करने में मदद करता है। उम्र के अनुसार रणनीतियों का पालन करना चाहिए ताकि उन्हें सूचना कौशल से परिचित कराया जा सके जो उनके स्कूल के पूरे करियर में अभ्यास किया जाना चाहिए। एक सुव्यवस्थित कक्षा पुस्तकालय कार्यक्रम निरंतर रूप से उपयोगी होना चाहिए। कार्यात्मक कक्षा पुस्तकालय, रचनात्मक रूप से डिज़ाइन की गई पुस्तकालय गतिविधियाँ और उचित मूल्यांकन छात्रों को आजीवन सीखने वाले बनाते हैं। प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए सीएमपी पुस्तकालयों का महत्व बहुत अधिक है। पुस्तकालयों को मजबूत बनाने के लिए पर्याप्त संसाधनों का उपयोग करना आवश्यक है।

सत्यवान रिछारिया
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय सी.आर.पी.एफ. बंगरसिया

"पढ़ना मात्र मस्तिष्क को ज्ञान की सामग्री देता है; हमारी सोच है जो उसे अपना बना लेती है।"

~स्वामी विवेकानंद

JUST FOR FUN

5

Read, Reflect and Rise: Promoting a Culture of Reading

As the librarian at PM SHRI KV AFS Yelahanka, I take great pride in managing a well-equipped library with robust infrastructure. We maintain a resource base of over 19,000 books and 2,000 reference documents, and we subscribe to 34 magazines and five newspapers. These resources are available in English, Hindi, and Kannada to cater to our diverse student community.

Each year, I procure new books through a consultative approach, gathering input from students, teaching and non-teaching staff, and the Library Committee. My primary focus is students' holistic development, and to that end, I organise a range of reading-related activities throughout the year to cultivate reading habits from their formative years.

Promotion of Reading Habits

Here are some of the unique initiatives I have introduced to promote a culture of reading in our Vidyalaya:

Holy Wednesday Mass – Mass Reading Session for Students

Once a month, I designate one Wednesday for a 30-minute mass reading session. Students bring a book of their choice on this day and gather at a common location in the Vidyalaya immediately after the morning assembly. This initiative has truly ignited the spirit of reading among students and has seen enthusiastic participation from all classes.

Book Takeaway – Periodical Book Fair-cum-Exhibition

I regularly organise book fairs and exhibitions to expose students to various trending and quality reading materials. Last year, we hosted two such events in collaboration with M/s Sapna Books and M/s National Book Trust (NBT), Bengaluru. With over 10,000 books displayed, students enthusiastically purchased books worth more than ₹1 lakh. The overwhelmingly positive response helped broaden students' exposure to different genres and authors.

Handicraft – Bookmark Making & Cover Designing Sessions

I conduct theme-based sessions on bookmark making and book cover designing to combine creativity with reading. Students choose quotes, dialogues, or slogans from their favourite books and turn them into vibrant bookmarks. In cover designing sessions, they create covers based on a central character or protagonist from a book they admire. These activities encourage

artistic expression and deeper engagement with literature.

Meet the Protagonists – Skit Sessions Based on World Classics
Collaborating with the CCA Committee, I initiated skit sessions in which students performed scenes from world classics. Memorable performances included adaptations of works by William Shakespeare and Munshi Premchand. The enactment of *Romeo and Juliet* received particular appreciation from the audience and helped students develop a stronger connection with classical literature.

Reading Mania – Reading Month & Library Week Celebrations
I celebrate Reading Month during June/July and follow it up with Library Week from November 14th to 20th. One of the highlights is the Book Review Presentation during morning assemblies. These sessions provide young readers with a platform to share the essence of the books they've read, thereby honing their communication and presentation skills and their love for reading.

The Way Ahead
The above initiatives have received a positive response from students and teachers, and the outcomes have been highly encouraging. I look forward to continuing these efforts with renewed enthusiasm in the upcoming academic session. I am confident that these initiatives will play a significant role in the personality development of our students.

Sriparvathi L
TGT Librarian
PM SHRI KV AFS Yelahanka

"A library is a place where history comes alive, where the past speaks to the present, and where the future is shaped."

~Rabindranath Tagore

6

Kindling the Love for Reading

To me, a reading habit is not merely an activity—it is a quiet ritual, a companionable pursuit that brings us into conversation with ideas, emotions, and distant worlds. It opens a window to imagination and becomes a key to understanding. Whether it's through the pages of a cherished novel, a crisp magazine article, or a thoughtful essay, I believe the habit of reading nurtures both the intellect and the soul.

At the heart of every school, the library stands as a **sanctuary** for this habit—a haven filled with stories, knowledge, and the endless promise of discovery. Within this space, I see my role as a librarian not just as a custodian of books but as a guide, a mentor, and sometimes a gentle **friend** who nudges young minds towards the world of books.

Being a librarian, for me, is not about managing shelves and catalogues. It is about **sowing seeds of curiosity** and helping them bloom into a lifelong passion. Throughout my journey, I've seen this profession not merely as a duty but a **privilege**. There's an indescribable joy in watching a hesitant reader blossom into an eager explorer of books. Encouraging the habit of reading is not just a task—it's a **calling**.

As I reflect on my experiences, I find immense happiness in writing about the little ways I've tried to make reading a **cherished part** of my students' lives.

Promoting reading, I've found, is truly the art of **opening minds**. It's about helping children see beyond the surface, ask questions, imagine, and dream. A child who reads regularly begins to shine—not just in academics, but in conversation, in confidence, and kindness. Through books, they broaden their perspectives, develop empathy, and learn to listen to vastly different voices. In reading, they travel to lands unknown and connect with ideas from distant times. They begin to see how vast and beautiful the world truly is.

To kindle this love for reading, I've learned that **a bit of creativity and a lot of consistency** go a long way. I've introduced reading programmes where stories come alive through **recitations**, **enactments**, and **friendly reading challenges**. These engaging yet straightforward events often spark a **lifelong bond** with books. When children are given goals, invited to share their experiences, and celebrated for their efforts, they associate reading with joy.

Book reviews have also been a potent tool, not just as an academic exercise, but as a **window into my students' minds**. When they express what they loved, disliked, or discovered in a book, they take ownership of their reading. It strengthens their voice, sharpens their thinking, and connects them to a larger community of readers and thinkers.

And then come the grander moments—**book fairs** that turn the library into a treasure trove, **author interactions** that spark dreams in budding writers, and **reading workshops** that ignite creative flames. These moments become milestones in our journey of reading together.

Yasmeen Jamil
TGT Librarian
PM SHRI KV Masjid Moth Shift I

"Cultivation of mind should be the ultimate aim of human existence.
Libraries are the true cultivators of the mind."

~Dr. B.R. Ambedkar

All The Broken Pieces
JOHN BOYNE
JOHN GREEN

7

पुस्तकालय प्रबंधन में नवीन कार्यक्रम

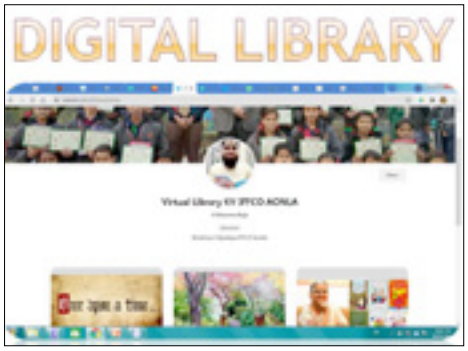

परिस्थितियां हमेशा एक जैसी नहीं रहती हैं।समय के साथ हमारा व्यक्तित्व, पसंद, नापसंद और यहां तक कि हमारी क्षमताएं भी बदलती रहती है, फिर चाहे हम कोई बदलाव चाहे या नहीं। लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यह बदलाव हमारे नियंत्रण से बाहर नहीं है बल्कि हमारे हाथ में है। अगर हम चाहे तो आने वाले कल को एक दिशा दे सकते हैं।

रूड्यार्ड किपलिंग ने कहा है कि "अगर तुम हर प्रतिकूल मिनट को ऊर्जा से भर सकते हों तो ये जहां तुम्हारा है।" विद्यार्थियों की पढ़ने की अभिरुचि को बढ़ावा देने, उन्हें आजीवन पाठक के रूप में तैयार करने, उन्हें पुस्तकालय के बेहतर उपयोग की ओर आकर्षित करने, विद्यार्थियों में सूचना कौशल साक्षरता कौशल ,लेखन कौशल संचार कौशल का विकास करने हेतु पुस्तकालय की अहम भूमिका है।

मेरे द्वारा वर्तमान समय की मांग के अनुसार लाइब्रेरी ब्लॉग को विद्यार्थियों के लिए प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों के शैक्षणिक संवर्धन हेतु कई ऑनलाइन क्विज़ भी तैयार किए जो अच्छी सामग्री, ग्राफ़िक्स और इमोजी से भरपूर थे और इन्फोर्मेंट के अत्यधिक मूल्यवान स्रोत थे। यह सभी प्रश्नोत्तरियां विद्यार्थियों की रुचि और स्तर के अनुसार बनाई गई हैं तथा विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक तो है ही साथ ही मनोरंजन भी है।

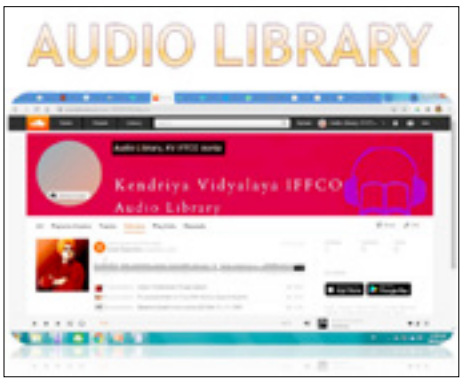

केंद्रीय विद्यालय इफको आंवला बरेली में विकसित वर्चुअल लाइब्रेरी के माध्यम से कई छात्रों को ऑनलाइन माध्यमों ज्ञान के भंडार तक पहुँचने में मदद की। आज के इस डिजिटल युग में अत्यधिक स्क्रीन टाइम के जोखिम को कम करने के लिए मेरे द्वारा एक ऑडियो लाइब्रेरी का विचार प्रस्तुत किया जो ऑनलाइन सामग्री को सुनने में मदद करता है। इससे विद्यार्थियों के सुनने के कौशल, उच्चारण और श्रुतलेख में सुधार किया, जिससे उन्हें अपने संचार कौशल को निखारने में मदद मिली।

ई-लाइब्रेरी को और अधिक सुलभ बनाने के लिए क्रोमियम आधारित लाइब्रेरी ऐप को एंड्रॉइड फोन पर डिज़ाइन और इंस्टॉल किया गया।

इसके परिणाम अच्छे रहे, वे छात्रों को पढ़ने, सीखने और रचनात्मक होने में मदद करते हैं। इनकी मुख्य विशेषता यह थी कि वे सभी पढ़ने/सुनने की सामग्री ऑनलाइन मोड के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं, जिससे देश भर के केंद्रीय विद्यालयों में एक आकर्षक संयोजन बनाता है। इन पहलों ने विद्यालय में छात्रों की पढ़ने की आदतों पर सकारात्मक प्रभाव डाला है। मेरे इन सभी प्रयासों से विद्यार्थियों को अप्रत्याशित लाभ भी मिला है। मेरा विद्यार्थियों के लिए सदा से ही यह प्रयास रहा है कि वे जितना सीख सकते हैं,सीखें। क्योंकि समय अमूल्य है वे इसका सदुपयोग कर अपना वर्तमान और भविष्य दोनों ही संवार सकते हैं। मेरे द्वारा किए गए प्रयासों से मुझे आत्मिक सुख और संतुष्टि मिली है। कहते हैं कि खुशी के लिए काम करेंगे तो संभवतः खुशी न मिले, परंतु खुश होकर कार्य करने से खुशी और सफलता दोनों अवश्य मिलती है। यह उक्ति मेरे लिए वाकई चरितार्थ हुई है।

वसीम राजा
पुस्तकालयाध्यक्ष
के वि इफको आँवला बरेली

"पुस्तकालय वह स्थान है जहाँ मौन शब्दों से अधिक प्रभावशाली होता है।"

~खुशवंत सिंह

8

Library as a Resource Centre for Learning

The Power of the Written Word

As a member of modern society, I know its varied needs. Education is perhaps the most important among them, for it helps to mould a well-informed, knowledgeable, and responsible citizen who alone can contribute to progress and advancement. The advantages and opportunities which literacy, reading, and communication by the written word offer will only be secured if posterity grows up with an understanding of the importance of books and the habit of using them in the formative period of childhood. To bring children and books together successfully, children must experience the pleasure of reading. I believe there is a need to promote reading as a skill among them so that they can bring past knowledge and experience to the information and text, and create new understanding, solve problems, make inferences, and connect to other texts and experiences.

Guidelines and Policies

I have followed the government guidelines and policies to establish school libraries with relevant resources, user-oriented services, and modern technologies. I intend to equip students and staff members with the information literacy skills required to face the challenges of the emerging knowledge society. I have adhered to the guidelines based on the previous KVS Library Policy (2008), CBSE: Organizing School Libraries Manual (1998), IFLA/UNESCO School Library Guidelines (2002), National Curriculum Framework (2005), National Knowledge Commission Recommendations on Libraries (2008), and several other international school library guidelines.

Children naturally love good stories. Therefore, I initiated a project using myths and legends to help children develop their interest in reading while learning about cultural heritage. In this project, primary schools reproduced myths or legends in their chosen formats, such as comics or interactive books.

My Objectives as a Librarian

As a librarian, I feel I have the following objectives:

- To identify the reading comprehension ability of students from Standards I to V.
- To identify the reading comprehension ability of students from Standards VI to VIII.
- To identify the overall reading comprehension ability of students.
- To promote reading among students.
- To encourage reading through flagship programmes.

Unfortunately, I have observed that reading has lost importance as the young and the old are glued to television. As far as educational institutions are concerned, coaching students for examinations seems to be the be-all and end-all of our education system. However, after the home, the school library is the most obvious place to develop a lifelong reading habit. It is a sad fact that although today every school affiliated with the Central Board of Secondary Education can take pride in having a library, these libraries often function merely as repositories for a fixed number of books required as a condition of recognition. Students visit once a week or fortnightly to take out and return books, rather than using the library as a true Resource Centre for Learning.

I believe the school library must function as the 'hub' of all school activities—a place where creative ideas can germinate, where exciting, innovative learning experiences take place, and where students joyfully browse books in a peaceful, pleasing, and inviting atmosphere.

Library Infrastructure and Learning Aids

Apart from printed material, I think different kinds of audio-visual aids are needed to enrich classroom learning and expose students to the larger world around them. The library should have a section devoted to films, slides, transparencies, photographs, maps, posters, charts, and hardware like radios, television sets, tape recorders/ players, VCRs, VCPs, slide and film projectors, overhead projectors, computers, and photocopiers—so that the library develops into a real Learning Resource Centre where both students and teachers can explore new paths of learning. While this may be difficult for all schools initially, I suggest that a shared resource model under a school cluster system can be initiated.

According to standards developed by the American Association of School Librarians (a division of the American Library Association), a school library, in addition to guiding individual reading and supporting the school curriculum, should also serve as a centre for instructional materials. These materials include books for all ages, printed materials, films, recordings, and other latest media designed to aid learning.

The function of such a centre is to gather, provide, and coordinate the school's learning materials and the equipment required for their use.

In some schools, I have seen a distinction made between a 'Library' and a 'Resource Centre,' maintaining them as separate entities. While the library is confined to print materials, the resource centre caters to non-print media. However, I believe it would be more efficient to merge both and assign responsibility for all learning materials—print and electronic—to the school library under the overall supervision of the librarian.

The Role of the Librarian and Teacher

One of the most important tasks of a school library is to inculcate reading habits among the younger generation. Books are mute entities; their value is realised only through a human agency that introduces and promotes them. I see this role fulfilled by the librarian and the teacher in the school setting. To achieve this, I feel close coordination between classroom teaching and the use of library resources is essential.

Librarians and teachers must work to encourage reading and library use. This requires consistent service, guidance, and engagement from the librarian. I believe students need to be taught how to select books, read and take notes, relate information from various books, and care for books. This also includes training in using catalogues, loan procedures, audio-visual materials, computer-assisted resources, bibliographies, and reference books. A library project or unit can help familiarise students with these skills.

Teachers must model and support library use. They can:

- recommend books of interest to students.
- allow students to visit the library as needed for reference.
- design assignments that require the use of library resources.
- distribute suggested readings.

I encourage students to read classics, biographies, travelogues, essays, fiction, and poetry. I also provide access to encyclopaedias, yearbooks, children's magazines, maps, and charts to foster emotional balance, intellectual curiosity, and broadened perspectives. I display student book reviews on the library notice board.

Classroom Libraries

While I consider the central library the learning hub, reading should extend to classrooms. I advocate for classroom libraries with selected fiction, nonfiction, and reference books maintained under the supervision of class teachers and student librarians. These books can be used during free periods or when a teacher is absent. The collection can be rotated among sections to offer

variety, including dictionaries, atlases, globes, and maps.

Library Programmes & Projects

Many programmes can be initiated by librarians with the support of teachers to motivate reading:

Story Hour: Accompanied by visuals, films, or puppetry, followed by children's narration or dramatisation.

Wall Magazines & Class Magazines: Including student-created stories, poems, puzzles, illustrations, and articles, fostering creativity.

Book Seminar

For older students, I organise book seminars to offer rich intellectual engagement. A selected book is discussed in a round-table format, often leading to further reading. Project work on authors and poets encourages exploration and presentation. 'Meet the Author' sessions with contemporary writers can be enlightening. Science symposia on current topics also prompt deep reading and presentation, fostering library visits and research.

Holiday Project Work

I use summer breaks creatively through model-making, charts, and projects based on library resources. These projects, displayed in a 'Holiday Assignment Exhibition,' are viewed by parents. Outstanding work receives awards or bonus marks.

Book Fairs

I organise book fairs with local publishers and booksellers during project weeks or holidays. These events expose parents and students to various books, encourage personal purchases, and assist teachers and librarians in book selection.

Book Week

I also organise 'Book Week' to spotlight the value of reading. Events include:

- Talks, lectures, discussions, and reviews
- Book exhibitions, library visits, and film screenings
- Faculty-themed days (e.g., Language Day, Creative Arts Day)
- Art contests around bookmark designing, book cover making, and slogan writing on reading

This can coincide with National Book Week (14–20 November).

Book Donation Drive

As part of Book Week, I encourage students to donate their books. Parents and well-wishers also contribute. This helps expand the library's collection at minimal cost.

Sunil Kumar Kurre
TGT Librarian
PM SHRI KV Vyasnagar Jajpur Road

"Development is not possible without knowledge. Libraries are the lifelines of learning in any democracy."

~Amartya Sen

9

Knowledge Weekly: A Flipbook to promote Literary Skills

As a librarian, my role extends beyond the traditional tasks of issuing and returning books. I actively engage in various enriching activities to foster a love for reading and creativity among students. These activities include conducting 'Meet the Author' sessions, organising book exhibitions, and hosting literary festivals to showcase students' poetry and story writing talents. Additionally, I curate newsletters, arrange character parades, and emphasise the importance of reading newspapers.

To further support our students' intellectual growth, I took the initiative to publish their works in newspapers and conduct seminars, debates, quizzes, etc. Embracing the digital age, our library offers various online services through Canva, Wordwall, Google Sheets, Google Forms, Quizizz, Wakelet, Padlet, Jamboard, and Buncee. One of the main highlights of my efforts is the creation of 'Knowledge Weekly', a flipbook that encapsulates many of our initiatives and serves as a vibrant testament to our commitment to education and literary enrichment. This report will delve briefly into the practice, impact, and significance of 'Knowledge Weekly'.

'Knowledge Weekly' is a flipbook published weekly throughout the academic year. It helps enrich children's literary skills and knowledge. An edition of 'Knowledge Weekly' includes an idiom, a thought, a few facts, news headlines, familiarising a book and its author, and an extract of a thought-provoking paragraph from a book (An Author's Worldliness). Each issue also includes a display of students' art and craft, their self-composed poems, travelogues, book reviews, etc. These creative works are taken from a Padlet (titled 'My Budding Talent') shared with all classes at the start of the academic year to showcase their remarkable talents. Each edition of 'Knowledge Weekly' features an online quiz related to its content, with winners announced in subsequent editions. Special pages for important days and Talent Icons are included frequently as well. This project helps provide knowledge in a simple and organised way. On the day of its publication, each week, that edition of 'Knowledge Weekly' is posted in all Google Classrooms and class WhatsApp groups. It helps blossom students' talents and creativity.

'Knowledge Weekly' has played a pivotal role in enhancing my students' language skills and creativity, while also providing teachers with a teaching aid and an effective tool to engage students during substitution periods.

Sreena P
TGT Librarian
PM SHRI KV SAP, Thiruvananthapuram

"Libraries are not mere storehouses of books, they are soulhouses of civilisations."
~Sarvepalli Radhakrishnan

10

सीखने की अनूठी जगह: पुस्तकालय

पुस्तकालय वह सर्व विदित स्थान है जहां जाकर छात्र का परिचय विविध विषयों की महान ज्ञान राशि से होता है। सीखना जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है कभी पढ़कर सीखते हैं, कभी देख कर, कभी सुनकर और कभी लिखकर। पुस्तकालय उस महत्वपूर्ण कार्य को करता है जिसमें उपरोक्त चारों गुण निहित हैं इसलिए केंद्रीय विद्यालय संगठन में पुस्तकालयों के अधिकाधिक उपयोग के लिए योजना और उसके क्रियान्वयन का उत्तम निर्णय लिया। एक पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में मैंने सदा से यह पाया है कि छात्र जब पुस्तकालय में आता है तब सबसे पहले अपनी रुचि के अनुरूप पुस्तक को देखता है, मैंने छात्रों की इन अभिरुचि को अपनी डायरी में अंकित किया है, जिससे धीरे-धीरे उनके द्वारा पठित सामग्री और उनकी अभिरुचि दोनों से परिचय होने लगा। मेरा प्रयास पढ़ने की आदत विकसित करने पर रहा है।

एनईपी 2020 का लक्ष्य भी पुस्तकालय को छात्रों के लिए अधिक से अधिक उपयोगी और ज्ञान अर्जन का क्षेत्र बनाना है। प्रत्येक छात्र के लिए नई पुस्तक, पुरानी पुस्तक, पढ़ी हुई पुस्तक इस तरह का विभाजन लाभदायक रहा है। कक्षा 6 में छात्रों ने जिन पुस्तकों को पढ़ा था, कक्षा 7 में वह अपनी अभिरुचि को बदलते हुए दूसरी तरह की पुस्तकों को पढ़ रहे हैं। कक्षा 8 और बड़ी कक्षाओं में आते-आते उनकी पढ़ने की चयन प्रक्रिया और रुचि भी परिवर्तित हो गई। यह सब विवरण मेरी डायरी में दर्ज किया गया। मैं तब और भी अधिक प्रभावित हुआ ,जब पठित पुस्तक के संबंध में बच्चों को अपने विचार रखने को कहा गया तब उसकी शब्दावली में उस पुस्तक की भाषा और शब्दावली का प्रयोग प्रकट हो रहा था। इससे मुझे समझ आया कि छात्र जब गहराई से किसी पुस्तक को पढ़ते हैं, तब पुस्तक की कहानी के साथ उसकी भाषा भी उसके जीवन का हिस्सा हो जाती है। एक अन्य अध्ययन में यह बात मेरे सामने आई कि कक्षा आठवीं, नौवीं के बच्चे अधिकतर जीवनियां पढ़ने में रुचि रखते हैं। किसी को अपना आदर्श मानना और उसकी जीवनी को पढ़ना और पढ़ने के बाद फिर स्वयं में परिवर्तन करने का यत्न करते हैं। यह सब सतत पढ़ने की प्रतिक्रिया है। पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में मेरा यह अनुभव भी है कि प्रदर्शित की गई पुस्तक और रंग-बिरंगे कवर वाली पुस्तक छोटे बच्चों को जल्दी आकर्षित करती है, जबकि गंभीर विषय और जीवनियां माध्यमिक कक्षाओं के बच्चों का प्रिय विषय होती हैं

पढ़ने के विभिन्न कार्यक्रम पढ़ने के प्रति लगाव को प्रोत्साहन देने के लिए यहाँ कई रणनीतियाँ दी जा रही हैं: हालाँकि, इन दिनों ऑनलाइन सामग्री की प्रचुर उपलब्धता है, लेकिन बहुत सी पुस्तकों को छूने ,छांटने ,देखने ,पलटने और पुस्तकालय में बैठ कर पढ़ने और पुस्तक इशू करवाने का आनंद अभी भी बेजोड़ है।

मैंने यह परियोजना छात्रों के कक्षा 6 में प्रवेश करते ही शुरू कर दी है। समाचारपत्र पढ़ना एक ऐसी गतिविधि है, जिसे मैंने छात्र के कक्षा 6, 7 में पहुँचने पर शुरू किया।

पुस्तक क्लब

पुस्तक क्लब पढ़ने को प्रोत्साहित करने का एक मनोरंजक समूह है। ये उन बच्चों के समूह हैं जिनकी पुस्तकों में समान रुचि है। वे आपसी सहमति से एक ऐसी पुस्तक चुनते हैं, जो सबको पसंद आती है। सप्ताह/महीने में क्लब के सदस्य एक बार मिलते हैं, और चुनी गई पुस्तक पर अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं। बुक क्लब अपनी पसंद की पुस्तकों को समान विचारधारा वाले बच्चों के साथ साझा करने का एक उत्तम प्लैटफ़ार्म है। यह पुस्तक की गुणवत्ता और उसके विचार को सभी तक पहुंचाने का एक प्रभावी तरीका है।

अपनी पसंद की किताब चुनना:

अपनी रुचि जगाने के लिए, यह बहुत ज़रूरी है कि छात्र ऐसी किताबें चुनें जिन्हें पढ़ने में उन्हें खुद वाकई दिलचस्पी हो। पढ़ना बहुत व्यक्तिपरक है और इसलिए यह ज़रूरी है कि छात्र उस शैली और लेखन शैली की किताबें चुनें जो उन्हें पसंद हो। दूसरों की पढ़ी हुई चीज़ों को ज़बरदस्ती पढ़ना, विषय और लेखन शैली का आनंद लिए बगैर, व्यक्ति की आगे पढ़ने की इच्छा को बाधित कर सकता है। पढ़ने का एक सामान्य नियम है :***50-पृष्ठ नियम*** : यदि कोई व्यक्ति किसी किताब के 50 पृष्ठ पढ़ने के बाद भी उसे पसंद नहीं करता है, तो उसे छोड़, दूसरी किताब आज़माना चाहिए।

पढ़ने के लक्ष्य निर्धारित करना:

यदि छात्र अपने लिए छोटे और प्राप्त करने योग्य पढ़ने के लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो इससे उन्हें पढ़ने की अपनी इच्छा को बनाए रखने में मदद मिलेगी। कार्यों के लिए यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करना हमेशा काम को पूरा करने का एक शानदार तरीका है। लक्ष्य दैनिक/साप्ताहिक या मासिक हो सकते हैं। दोस्तों के साथ लक्ष्यों को साझा करना और पढ़ने के लिए साथी बनाना भी अच्छा काम हो सकता है। शुरुआत में, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए थोड़ा जोर लगाना पड़ सकता है, लेकिन अंततः यह किसी की दिनचर्या का हिस्सा बन जाता है।

पढ़ने को मनोरंजन बनाना:

अधिकांश छात्रों के लिए, मनोरंजन का मतलब टेलीविजन देखना या संगीत सुनना है। अगर कोई पढ़ने को मनोरंजन के रूप में सोचना शुरू कर दे, तो छात्र अपने खाली समय का उपयोग पढ़ने और सीखने के लिए कर सकते हैं। पढ़ना केवल शैक्षिक पुस्तकों तक ही सीमित नहीं है। काल्पनिक कहानियाँ पढ़ने से भी छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता

है। पढ़ने से छात्रों की कल्पना और सोचने के कौशल का विस्तार होता है, जिससे उनके समग्र मस्तिष्क विकास और तर्क क्षमता में सुधार होता है।

पढ़ने को मनोरंजन बनाना पुस्तकालय अध्यक्ष के रूप में मैं इस और बहुत सावधान रहता हूं कि बच्चों को पढ़ना अनुपयोगी और और अरुचिकर ना लगे,उसे मनोरंजक बनाने के लिए मैंने विद्यालय के बहुत सारे प्रमुख स्थानों का उपयोग करने का निश्चय किया। प्रयोग के रूप में एक दिन मैं बच्चों को लेकर प्रार्थना सभा स्थल पर चला गया। वहां मैंने उन्हें पुस्तक पढ़ने के लिए बांट दी।अगली बार कुछ ऐसी पुस्तक चुनी जो प्रकृति से संबंधित थी, उन्हें लेकर मैं बच्चों को विद्यालय वाटिका में ले गया और उन्हें प्रकृति संबंधी पुस्तक

पढ़ने को दी। वसंत पंचमी के आसपास विद्यालय में स्थापित सरस्वती की प्रतिमा के पास बैठकर पढ़ना बच्चों को बहुत अच्छा लगा। इस तरह का प्रयोग करते हुए मुझे यह अनुभव हुआ कि एक स्थान पर बैठकर पढ़ने की बजाय बच्चों को अधिक मनोरंजक लगता है अलग-अलग स्थान पर बैठकर पढ़ना।

[ब] पुस्तक समीक्षा

पढ़ी गई पुस्तकों पर सक्रिय रूप से चर्चा करना:

जिस तरह हम अपने दोस्तों और परिवार के साथ देखी गई फिल्मों और वेब सीरीज़ पर चर्चा करते हैं, अगर हम छात्रों को उनके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें, तो इससे उन्हें पढ़ने के लिए और अधिक प्रोत्साहन मिलता है। विद्यालय में हर सोमवार को स्कूल असेंबली के लिए बुक टॉक, बुक रिव्यू या स्टोरी टेलिंग निर्धारित है। जिससे बच्चों को अधिक से अधिक पढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

पुस्तक प्रदर्शनी

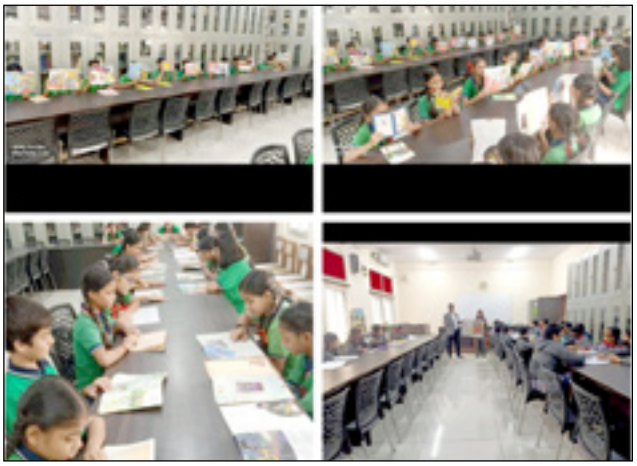

पुस्तक प्रदर्शनी पुस्तकालय का एक नियमित कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों दोनों में पढ़ने की आदत विकसित करना है। विद्यालय में स्कोलास्टिक/ बुक टेक, बुकसेलर/वितरक ने भाग लिया और फिक्शन, नॉन फिक्शन, ऑटोबायोग्राफी, रेफरेंस बुक्स, पॉप अप बुक्स, इनसाइक्लोपीडिया आदि पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शीर्षक प्रदर्शित किए। प्रदर्शनी का सबसे अच्छा हिस्सा यह था कि पुस्तक विक्रेता द्वारा कई गतिविधियाँ आयोजित की गईं और विजेताओं को अलग-अलग पुरस्कार दिए गए।

पी.एन. पणिक्कर माह समारोह

पी.एन. पणिक्कर (1909-1995) को केरल के पुस्तकालय और साक्षरता आंदोलन के जनक के रूप में जाना जाता है। 19 जून, उनकी पुण्यतिथि, 1996 से केरल में वयानादिनम (पठन दिवस) के रूप में मनाई जाती है। 2017 में, पीएम ने 19 जून, केरल के पठन दिवस को भारत में राष्ट्रीय पठन दिवस के रूप में घोषित किया है। इस महीने को भारत में राष्ट्रीय पठन माह के रूप में भी मनाया जाता है। पी.एन. पणिक्कर माह 19 जून से 18 जुलाई के तहत निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं -**पठन दिवस की शपथ,बुक मार्क बनाना,नारा लेखन,चरित्र चित्रण,चरित्र का वर्णन करें,लोगो डिज़ाइन,कहानी सुनाना,कहानी पुस्तक परिचय,पठन पर शिक्षकों का संदेश,पुस्तक चर्चा,कवर पेज डिज़ाइन,करियर चर्चा,करियर काउंसलिंग एंड गाइडेंस तथा पुस्तकोपहार** "पुस्तकोपहार" (जूनियर छात्रों को पाठ्यपुस्तकें सौंपना), केवीएस द्वारा एक अद्भुत पहल

VIRTUAL LIBRARY

WAKELET

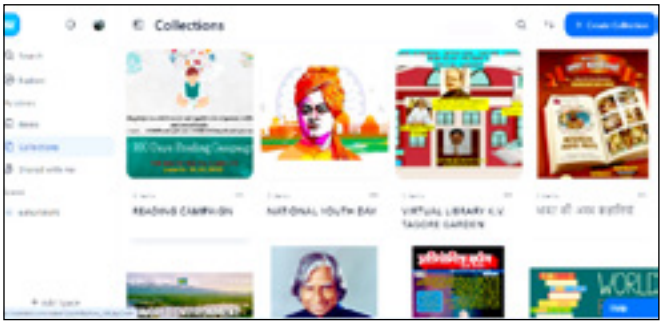

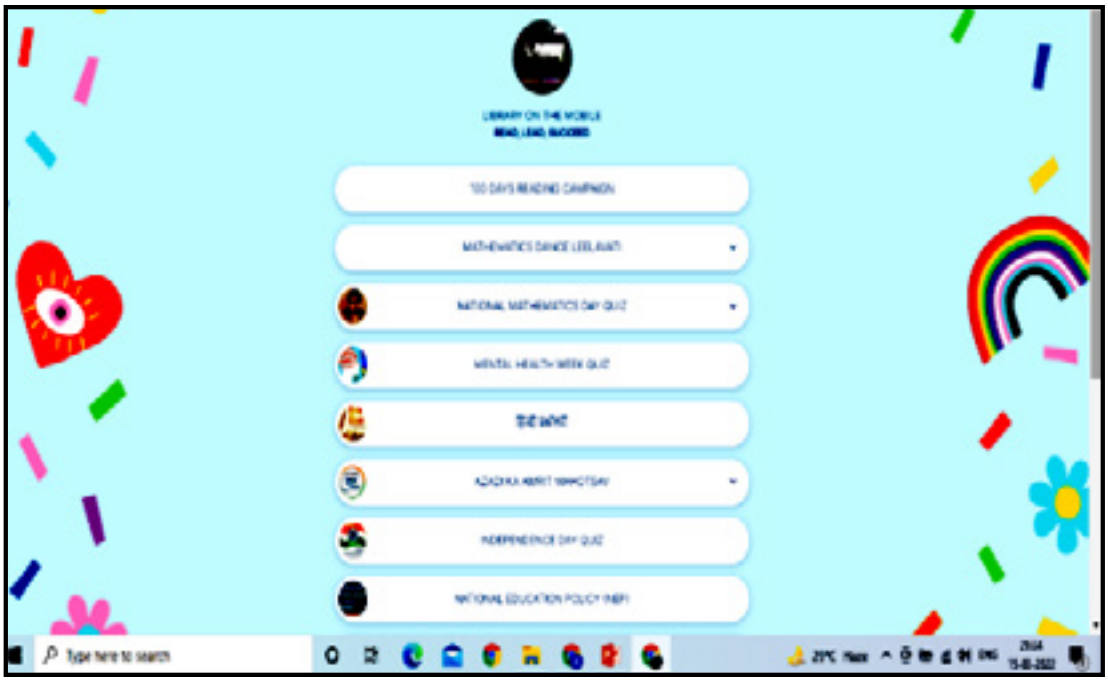

है। ये उपहार खास तौर पर कम आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के लिए उपयोगी हैं। इस तरह प्रयोग से छात्रों के बीच आपसी जुड़ाव की भावना बढ़ती है। छात्र सीखते हैं और जिम्मेदारी दिखाते हैं। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में पर्यावरणीय चेतना विशेषकर वृक्षों के प्रति संवेदनशीलता का विकास करना है, यह आयोजन आपसी सौहार्द एवं संसाधनों के पुनः उपयोग की भावना को प्रोत्साहित करने हेतु किया जाता है।

पुस्तकालय भ्रमण

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के तहत विद्यालय के पुस्तकालय रीडर्स क्लब के बच्चे मंडी हाउस स्थित साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित **"पुस्तकायन"** पुस्तक मेले में गए, जहां पर उन्होंने पुस्तक पढ़ने से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया पढ़ने को मनोरंजक बनाने और इसको लाइफस्टाइल या जीवन शैली में बनाने की दिशा में यह एक शानदार प्रयास है।

सतीश श्रीवास
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय टैगोर गार्डन

"पुस्तकालय विलासिता नहीं, जीवन की आवश्यकता है। पुस्तकें उपयोग के लिए होती हैं और हर पाठक की एक पुस्तक होती है।"

~डॉ. एस. आर. रंगनाथन (भारतीय ग्रंथालय विज्ञान के जनक)

CONVERSATION
ZONE

book
OF THE MONTH
AUTHOR
OF THE MONTH
Book Lovers
Tolkien
of the Month
PAMUK

11

Delving into Literature: Review of 5 noteworthy Library Books

This article reviews five books under the 'Promotion of Reading Habit' theme. I aim to help readers decide if these books are worth their time. Many people hesitate to start a new book without knowing its contents. I provide detailed insights into the main themes and topics covered in the books without giving away key information. This article serves two primary purposes: helping readers decide whether to read the books and promoting them effectively. I offer a structured summary of five notable books from the collection of the Kendriya Vidyalaya Kutra library. I outline the main discussion points and topics covered in each book. This article is a structural overview of the books and not an in-depth critical review.

Review of five notable books from the collection of KV Kutra Library:

Title: *Wonders of the Deep Sea*
Author: B. F. Chhapgar
Genre: Non-fictionl Marine Biology
Recommended For: Primary, Secondary & Senior Secondary Students, Teachers, and Staff

Wonders of the Deep Sea by B. F. Chhapgar is an engaging non-fiction book that explores the fascinating world beneath the ocean's surface. Through 12 captivating chapters, it reveals how deep-sea creatures adapt to darkness, how scientists study marine life, and how underwater exploration has evolved. Readers learn about glowing fish, deep-sea technology, sonar, drifting continents, and 'living fossils'. Ideal for primary to senior secondary students, teachers, and lifelong learners, the book combines marine biology and geology to inspire curiosity. Perfect for school libraries, science lessons, and environment-themed assemblies, it encourages young minds to dive deep into oceanic mysteries.

Title: *Deeds of Gallantry – Fifty Years of the 1971 Victory*
Editor: Amlesh Kumar Mishra
Published by: Ministry of Defence (History Division) in collaboration with the National Book Trust of India
Recommended For: Secondary & Senior Secondary Students, Teachers, and Staff

Deeds of Gallantry – Fifty Years of the 1971 Victory, edited by Amlesh Kumar Mishra, commemorates India's triumph in the 1971 war and the creation of Bangladesh. Published by the Ministry of Defence with the National Book Trust, it details key battles on the Western and Eastern fronts, highlighting acts of valour by the Indian Armed Forces. Featuring stories of heroes like Lt. Arun Khetrapal and Lance Naik Albert Ekka, the book includes award citations, personal accounts, and archival photos. Ideal for secondary students and educators, it brings history to life while honouring the courage and sacrifices of soldiers and civilians.

Title: *Nomads of India*
Author: Shyam Singh Shashi
Recommended For: Secondary & Senior Secondary Students, Teachers, and Staff

Nomads of India by Shyam Singh Shashi is a compelling exploration of India's diverse nomadic communities. Through ten well-researched chapters, it delves into their lifestyles, occupations, traditions, and challenges. The book categorizes nomads by profession and offers vivid cultural portraits, from dress to cuisine. It also highlights the Roma people—nomads of Indian origin abroad—and includes personal anecdotes with tribes like the Gaddis. Concluding with thoughtful reflections, it underscores the richness of nomadic heritage. Ideal for secondary students and educators, this book introduces a rarely discussed subject, fostering curiosity, empathy, and a deeper understanding of India's cultural mosaic.

Title: *Bullock Carts and Satellites: The Development of Science and Technology in India*
Author: Monisha Bobb
Recommended For: Secondary & Senior Secondary Students, Teachers, and Staff

Bullock Carts and Satellites by Monisha Bobb traces India's remarkable scientific and technological journey from ancient civilizations to the modern era. Spanning nine chapters, the book explores innovations in urban planning, medicine, astronomy, and mathematics through the Vedic, Mauryan, Sultanate, and Mughal periods. It highlights iconic thinkers like Aryabhatta and Susruta, and showcases India's progress during colonial rule and post-independence, including achievements in space, energy, and computing.

Title: *Understanding Climate Change*
Author: Dr. M. A. Haque (Ph.D. in Environmental Science, JNU)

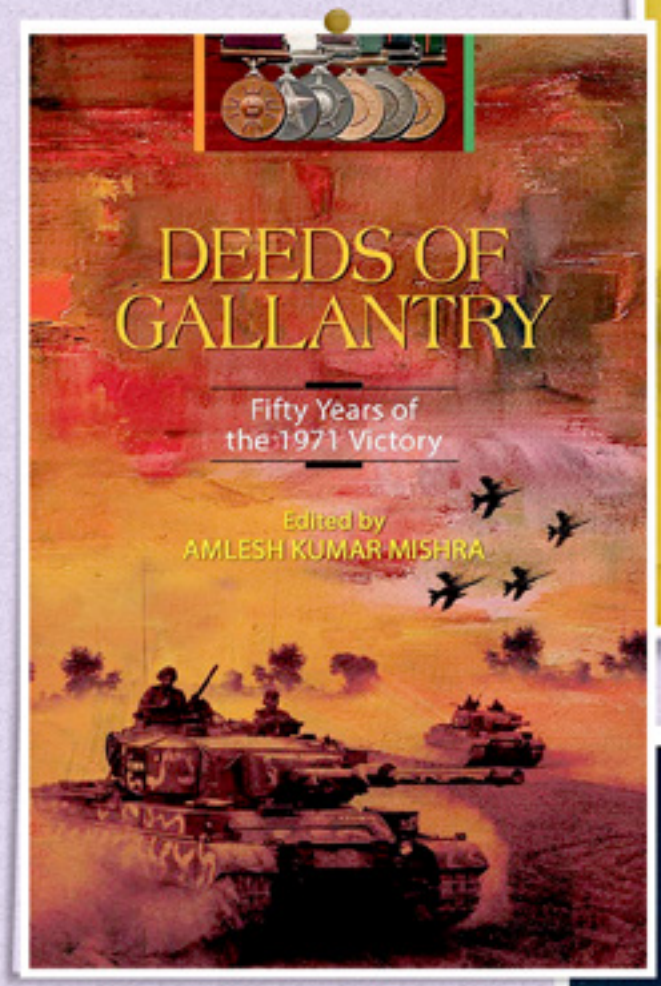
DEEDS OF GALLANTRY
Fifty Years of the 1971 Victory
Edited by
AMLESH KUMAR MISHRA

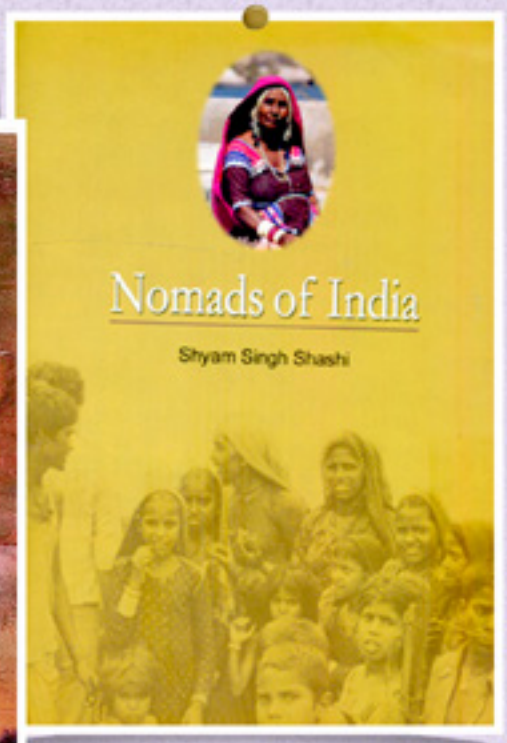
Nomads of India
Shyam Singh Shashi

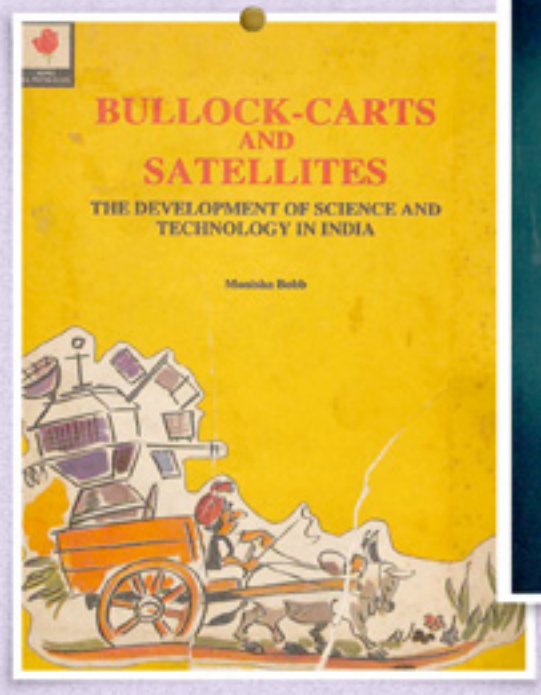
BULLOCK-CARTS AND SATELLITES
THE DEVELOPMENT OF SCIENCE AND TECHNOLOGY IN INDIA

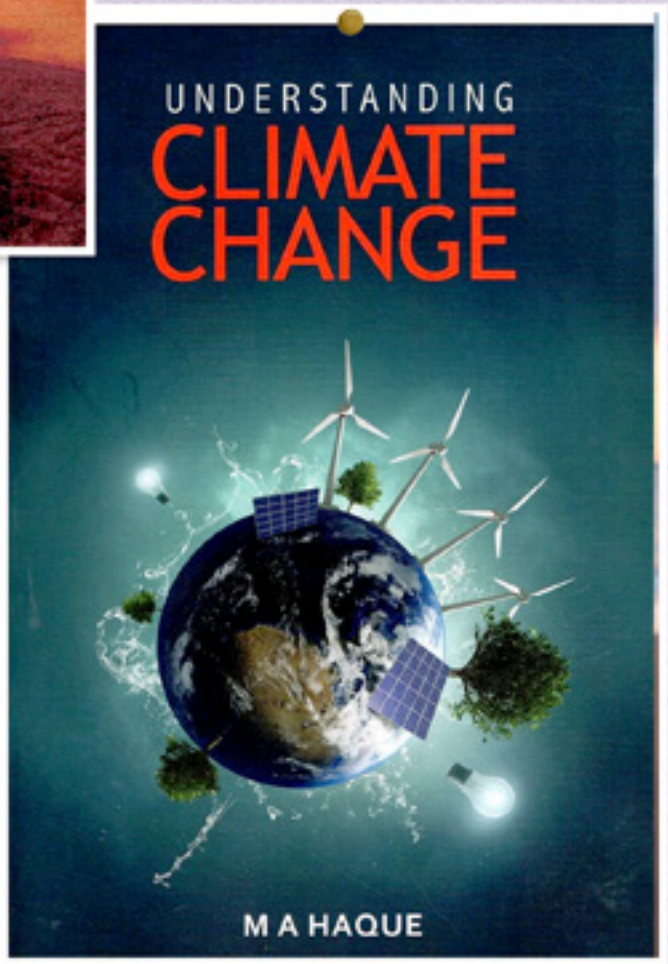
UNDERSTANDING
CLIMATE CHANGE
M A HAQUE

Recommended For: Senior Secondary Students, Teachers, and Staff

Understanding Climate Change by Dr. M. A. Haque offers a clear, in-depth exploration of climate change across eight insightful chapters. It covers fundamental concepts, scientific evidence, causes, and the unequal impact on developing nations, especially the Himalayas. The book explains global efforts like the Kyoto Protocol, COP summits, and the Clean Development Mechanism while offering practical solutions such as renewable energy and afforestation. Though some policy sections may be complex, the book remains vital for raising awareness and inspiring climate action. Perfect for senior students, educators, and anyone committed to understanding and addressing this urgent global challenge.

A Word of Recommendation

As a school librarian, I strongly advocate including non-fiction books covering essential topics alongside fictional literature in every school library. At Kendriya Vidyalaya Kutra, our library boasts a diverse collection encompassing science, history, geography, performing arts, and more. However, the presence of these books alone does not guarantee student engagement. It is crucial to actively promote these resources among students to pique their interest and encourage exploration. One effective method is through book reviews, which serve as a bridge between the library's offerings and students' curiosity. By highlighting the relevance and insights of non-fiction works, I can foster a culture of enthusiastic reading and lifelong learning among our student community.

References

- Chhapgar, B. F. (2020). *Wonders of the Deep Sea*. National Book Trust.
- Mishra, A. K. (Ed.). (2021). *Deeds of Gallantry – Fifty Years of the 1971 Victory*. National Book Trust.
- Shashi, S. S. (2021). *Nomads of India*. National Book Trust.
- Bobb, M. (2021). *Bullock Carts and Satellites: The Development of Science and Technology in India*. National Book Trust.
- Haque, M. A. (2023). *Understanding Climate Change*. National Book Trust.

Dipanwita Mandal
TGT Librarian
KV Kutra

"A library is a repository of culture and a fountain of inspiration. If I were to be in prison for life, I would still need books."

~Jawahar Lal Nehru

12

Spotlight on a Library: The Hebbal Hub of Books

PM SHRI Kendriya Vidyalaya Hebbal School Library

I take pride in managing the PM SHRI Kendriya Vidyalaya Hebbal School Library, a vibrant and dynamic hub for learning, research, and collaboration. As the sole librarian, I ensure the library functions efficiently and is a vital resource for students, teachers, and staff. I provide access to many books, digital resources, and educational tools. I aim to cultivate a love for reading, enhance literacy skills, and support the academic curriculum.

In addition to my library responsibilities, I support various school departments such as admissions and timetable management.

My Mission

I aim to empower students with the knowledge and skills they need to thrive in a rapidly changing world. I strive to make the library a dynamic and inclusive space that promotes academic excellence, fosters curiosity, and nurtures a lifelong love for learning.

Collection Highlights

1. Print Collection

Children's and Young Adult Literature: I maintain a diverse and age-appropriate selection of fiction and nonfiction books, including NCERT and KVS-recommended titles and popular series.

Curriculum Support: The library offers textbooks, reference books, and supplementary materials for subjects such as Mathematics, Physics, Chemistry, Biology, and History.

Special Collections: I curate books on current affairs, quiz books, competitive exams, local history, and culturally significant topics to broaden perspectives.

Periodicals: I subscribe to magazines and journals for children and young adults, including those focused on competitive exams.

Hindi Literature: A rich collection of Hindi books is available to help students develop reading habits in our national language.

Regional Language Books: I also offer Kannada language books to support students in learning and appreciating the regional language.

Technology Integration

Automation: I use *e-Granthalaya* software to automate routine tasks like book issues and returns.

Library Blog: I regularly update our library blog with helpful information and learning resources.

Virtual Library: I manage an online platform that offers students access to e-books and digital learning materials. Virtual Library Link

Facilities and Equipment

Computers: The library has modern computers and the latest software to help students with research, design, and multimedia projects.

Reading Room: I maintain a well-designed space that accommodates an entire class.

Library Activities

The library is always active and buzzing with enthusiastic students engaged in various regular and special activities. I organise:

Library Hour: Each class from VI to XII has a dedicated period for reading, browsing, and knowledge enhancement.

Book Circulation: I issue books to students during their allotted time so they can enjoy reading at home or during leisure.

Reading Month (19th June—18th July): I celebrate this with literary quizzes, book reviews, and mass reading sessions.

Library Week (14th—20th November): I conduct a week of

exciting activities to ignite students' interest in reading.

Competitions and Events Include:

- Book Review Writing
- Book Jacket Designing
- Bookmark Making
- Quiz on Books and Authors
- General Knowledge Quiz
- Essay Writing
- Role Play of Book Characters
- Skits and Storytelling
- Author Introductions
- Book Fair
- "Drop Everything and Read" sessions

Special Initiatives

Pustakopahar (Book Donation Drive): I encourage students to donate their used textbooks to juniors, fostering the values of reuse and responsibility.

Morning Assembly Programmes: I introduce books and authors during assemblies to spark interest in new reading material.

Primary Class Library: I provide age-appropriate books with large fonts and colourful illustrations to instil early reading habits

in primary students.

Readers' Club: I organise book clubs and reading challenges to maintain a reading culture throughout the year.

Support Services

Librarian Assistance: I assist students in research, book selection, and digital tools.

Resource Guides: I prepare topic-based guides to support classroom learning and projects.

My Role in the School Community

The library plays a key role in the educational framework of PM SHRI Kendriya Vidyalaya Hebbal. I believe it strengthens academic excellence and contributes to shaping well-rounded individuals. I strive to make the library a safe, inclusive, and stimulating environment where students can explore, collaborate, and develop essential skills for lifelong success.

Prathima
TGT Librarian
PM SHRI KV Hebbal

"In a world full of distractions, a library is still the best place to meet your future self."

~ Chetan Bhagat

The Heart of NEP:
PM SHRI Libraries for Lifelong Learning

Smart Infrastructure for Smarter Learning

Dedicated Furniture for Library

Modern library spaces with aesthetic design, collaborative zones, and cosy reading corners make learning a joyful experience.

PM SHRI Libraries: A Treasure Trove of Knowledge

Library with a Diverse Collection of Books

Equipped with a wide range of books, periodicals, and newspapers, PM SHRI libraries nurture informed, curious, and well-read learners.

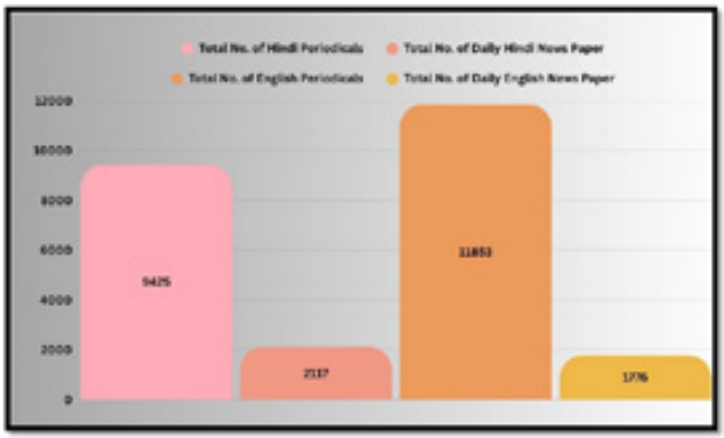

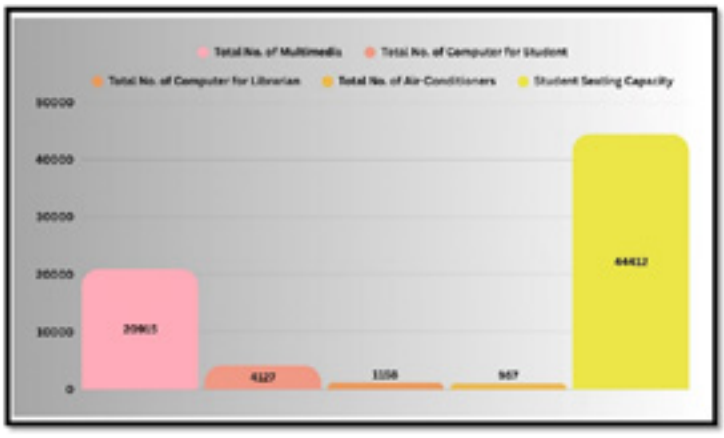

E-GRANTHALAYA: A Library That Never Closes!

Digitised Record Keeping & Circulation of Books

Under the PM SHRI initiative, E-GRANTHALAYA transforms school libraries into inclusive digital learning hubs. 24/7 digital access to e-books, journals, and learning tools—anytime, anywhere. Bridging gaps and building futures through tech-enabled education.

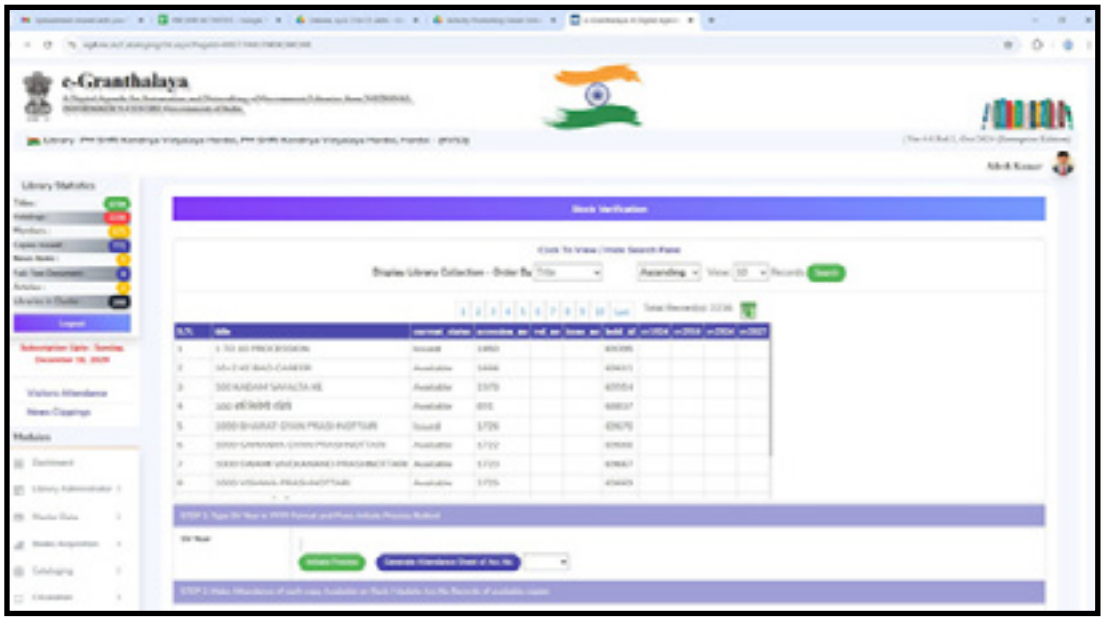

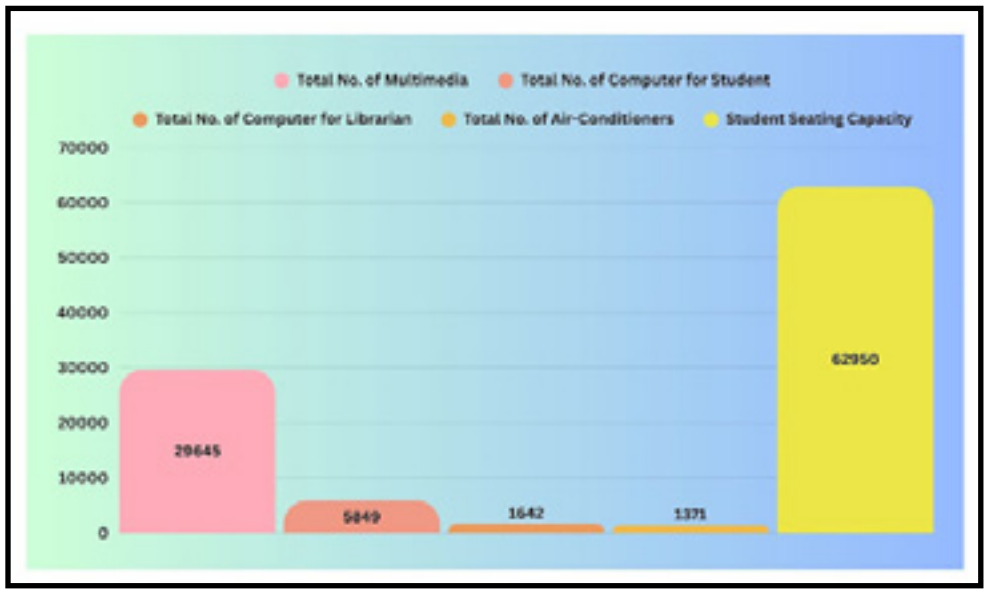

13

पुस्तकों का अनमोल खज़ाना: बाल पुस्तकालय की विशिष्ट संग्रहणीय कृतियाँ

केन्द्रीय विद्यालयों के पुस्तकालयों में अनेक प्रकार की पुस्तकें उपलब्ध होती हैं — पाठ्यपुस्तकें, कथा साहित्य (उपन्यास, कहानियाँ, नाटक आदि), गैर-काल्पनिक पुस्तकें (जीवनी, आत्मकथाएँ, डायरियाँ आदि), संदर्भ पुस्तकें (शब्दकोश, मार्गदर्शिका, प्रतिवेदन, मैनुअल, एटलस, विश्वकोश), शैक्षणिक पुस्तकें, विषय-आधारित सहायक पुस्तकें, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधी पुस्तकें और अन्य अनेक प्रकार की पुस्तकें।

इनके बीच कुछ विशिष्ट पुस्तकें ऐसी होती हैं जिनका चयन विशेष रूप से विद्यार्थियों में विभिन्न कौशल, शब्दावली, जागरूकता और समझ विकसित करने हेतु किया गया है। ऐसी ही कुछ उल्लेखनीय पुस्तकों की सूची निम्नलिखित है:

- **" मेरे लिए मूल्य" श्रृंखला की पुस्तकें:**

यह श्रृंखला "फ्यूचर बुक्स" द्वारा प्रकाशित कुल २० पुस्तकों की है, प्रत्येक पुस्तक में २४ रंगीन पृष्ठ होते हैं और हर एक में करुणा, दया, साहस, मित्रता, बुद्धिमत्ता आदि मूल्यों पर आधारित पाँच कहानियाँ सम्मिलित होती हैं। ये कहानियाँ बच्चों को नैतिक मूल्यों की गहराई से पहचान कराती हैं। ये मनोहारी चित्रों से सजी हुई पुस्तकें न केवल बाल पाठकों को आकर्षित करती हैं, बल्कि उन्हें कल्पनाशील, विचारशील और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा भी देती हैं।

विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा ३ से ५) के बच्चों को इन पुस्तकों से जोड़कर उन्हें नई शब्दावली सीखने, उच्चारण का अभ्यास करने और नैतिक कहानियाँ सुनाने-लिखने की आदत विकसित की जाती है। कई विद्यालयों में इन पुस्तकों की पाँच या अधिक प्रतियाँ क्रय कर कक्षा पुस्तकालय के रूप में वितरित की जाती हैं।

- **अमर चित्र कथा**

प्राथमिक कक्षाओं के लिए हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में उपलब्ध इन चित्र कथा पुस्तकों में राणा प्रताप, गणेश, शिव, सीता, अभिमन्यु, हनुमान, गरुड़ आदि जैसे पात्रों की जीवंत कहानियाँ होती हैं। यह संग्रह बच्चों को भारतीय संस्कृति, परंपराओं और महान चरित्रों से परिचित कराता है और उनके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है।

इन पुस्तकों की चित्रमय प्रस्तुति बच्चों को स्वाभाविक रूप से पढ़ने की ओर आकर्षित करती है और उन्हें अपनी स्वयं की चित्र कहानियाँ रचने के लिए प्रेरित करती है।

- **बाल जीवनियाँ – कक्षा ३ से ८ हेतु:**

इन पुस्तकों का संग्रह विद्यालय पुस्तकालयों के लिए अत्यंत आवश्यक है। सरल भाषा में लिखी गई इन जीवनी पुस्तकों के माध्यम से बच्चे देश-विदेश के महान व्यक्तित्वों — जैसे स्वतंत्रता सेनानी, वैज्ञानिक, संगीतकार, नेता, खिलाड़ी, व्यवसायी एवं लेखक — से परिचित होते हैं।

कक्षा ५ से ८ तक के छात्र इन पुस्तकों को पढ़कर इन विभूतियों के जन्म, शिक्षा, कार्य, पुरस्कार एवं जीवन के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी संक्षेप में नोट कर सकते हैं। यह अभ्यास विद्यार्थियों की लिखावट, शब्द ज्ञान, उच्चारण कौशल तथा संवाद क्षमता को बेहतर बनाता है और उन्हें

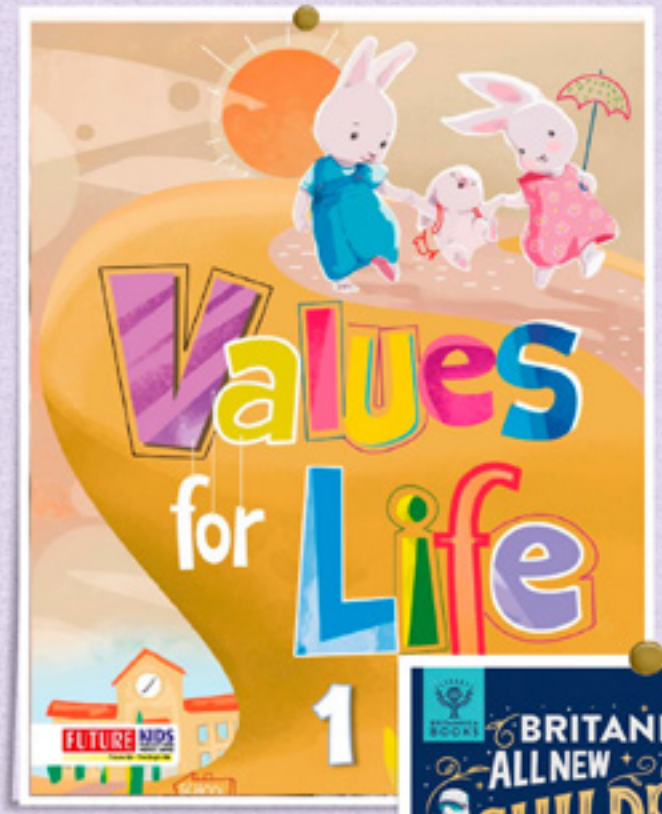
Values
for Life
1
FUTURE

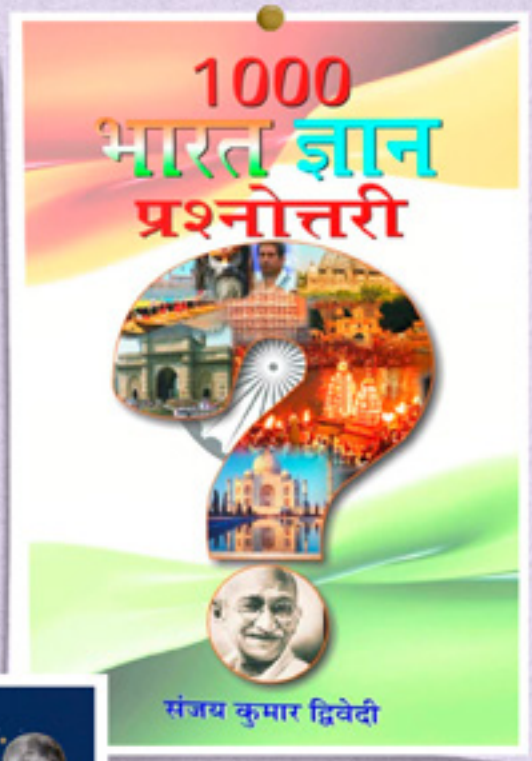
1000
भारत ज्ञान
प्रश्नोत्तरी
संजय कुमार द्विवेदी

BRITANNICA
ALL NEW
CHILDREN'S
ENCYCLOPEDIA
WHAT WE KNOW
& WHAT WE DON'T

अमर
चित्र
कथा

NO BETTER
FRIEND
PATH TO THE
STARS
SYLVIA ACEVEDO

BEST
BIOGRAPHY
BOOKS
FOR KIDS
Bomber
soul surfer
Wait! WHAT?
MUHAMMAD
ALI Was a
Chicken?
DAN GUTMAN
ENDURANCE
SCOTT KELLY

सामाजिक विज्ञान तथा अन्य विषयों में रुचि लेने हेतु प्रेरित करता है।

- **१००० प्रश्नोत्तर पुस्तकें:**

यह पुस्तकें हिंदी और अंग्रेज़ी दोनों में कम लागत में उपलब्ध हैं। इनमें सामान्यतः विभिन्न विषयों पर १००० वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं उनके उत्तर होते हैं। जैसे: डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पर आधारित, विश्व ज्ञान, भौतिकी, रसायन, गणित, कंप्यूटर, स्वतंत्रता सेनानी, स्वामी विवेकानंद आदि विषयों की १००० प्रश्नों की शृंखला।

इन पुस्तकों से कक्षा १२ तक के छात्र सामान्य ज्ञान बढ़ा सकते हैं, प्रश्नोत्तरी तैयार करना सीख सकते हैं और उच्च शिक्षा में शोध के लिए आधारशिला रख सकते हैं। इसलिए मैं, एक पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में, इन पुस्तकों को ज़रूर पुस्तकालयों में रखने की सिफारिश करता हूँ।

- **संदर्भ पुस्तकें व विश्वकोश**

पुस्तकालयों में अनेक प्रकार की संदर्भ पुस्तकें होती हैं — शब्दकोश, एटलस, गाइड बुक्स, मैनुअल्स, रिपोर्ट आदि। इनमें विश्वकोश (एन्साइक्लोपीडिया) अत्यंत रुचिकर और ज्ञानवर्धक होते हैं।

ये विश्वकोश रोचक चित्रों से सुसज्जित होते हैं और बच्चों को विषयवार जानकारी रोचक ढंग से देते हैं, जिससे उनका संवाद कौशल भी विकसित होता है।

गिरिजा शंकर
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय ए.एम.सी. लखनऊ

"पुस्तकालय विद्यार्थियों की बौद्धिक यात्रा की पहली सीढ़ी हैं।"

~रमेश पोखरियाल 'निशंक'

14

An Initiative for a Student-Friendly Modified Search Engine

The need for an e-library

In the age of abundant (mis)information available at the press of a button, I believe it becomes essential that every librarian, including myself, attempts to maintain a library and e-library that caters to students' needs by 'providing the right item to the right user at the right time'.

To ensure that our students and teachers have access to genuine information and resources, I have maintained a fully operational library website at PM SHRI Kendriya Vidyalaya Laitkor Peak, Shillong. Our library is a testimony to my experience and expertise, and I have passionately developed a modified search engine—an enhanced alternative to Google.

Website:

To disseminate resources that our students and teachers require to improve learning standards and achieve in-depth understanding of various concepts, the fully functional and user-friendly website of our school library—kvlkpeaklibrary.wordpress.com—provides, but is not limited to, the following resources:

- Question papers of the last 5 years
- Sample question papers from classes IX to XII
- Career guidance materials
- Other such useful resources for students and teachers, etc.

I have also introduced a QR code facility on the website, making it compatible with mobile phone usage. Another significant addition to the website is the Modified Search Engine, which can be accessed through the "Search around the world in a single place" option.

The Need for a Modified Search Engine:

In the Information Age, where there is an overflow of information online, finding a helpful resource with authentic information, especially one safe for students, feels like searching for a needle in a haystack. I have observed that students and teachers, understandably, waste a significant portion of their time searching, scanning, and reading through irrelevant content. They often fail to find credible study materials despite those wasteful hours of surfing.

For students and their parents, who remain apprehensive about allowing children to access the Internet due to safety concerns, it becomes essential to develop a Modified Search Engine like ours. This engine automatically filters and weeds out thousands of harmful, misleading, and fake sites and links. It provides access only to safe, authentic, and useful sites, thereby saving time, data, and human resources and ensuring the safety of children.

As we are now in the Information Age, I believe the chief concern

of facilitators and parents is to manage information effectively and provide relevant and safe resources to impressionable young minds.

Functions of the Modified Search Engine:

A modified search engine can also be termed a Federated Search Engine. This engine searches for genuine and authentic information from sources like CBSE, NCERT, the Government of India, KVS, LOC (Library of Congress), and NDL (National Digital Library).

If I compare the traditional search engine with the search engine on this website, I can conclude that the latter provides only authentic information from trusted sources, whereas traditional search engines mix information from authentic and non-authentic sources. Students can also search for relevant images using this search engine.

This tool fulfils its main purpose of enabling users to find authentic information at the right time. It is a modified Google search engine, which I like to term an 'enhanced Google search engine', but it is more precise than the regular Google search for retrieving educational content relevant to school children.

My role as an Information Manager

The functions of libraries have evolved. I no longer see myself as just a custodian of books—I now act as an information manager or information scientist, managing the process and disseminating the desired information to patrons using modern techniques and expertise.

Implementing a modified search engine in our library greatly assists students and teachers in finding specific information quickly.
www.kvlkpeaklibrary.wordpress.com

'Search around the world in a single place'—modified search engine embedded in kvlkpeaklibrary.wordpress.com

Arindam Guha Biswas
TGT Librarian
PM SHRI KV Laitkor Peak, Shillong

"The quiet presence of a library in a town is more powerful than a police station. It shapes minds."
~R K Narayan

15

Comprehensive Reading Programme

As a librarian at Kendriya Vidyalaya Madhupur, I genuinely believe in the vision of Kendriya Vidyalaya Sangathan, which promotes the use of the library as a resource centre of every school. I strive to ensure that our library fulfils the needs of students by providing both printed and electronic resources. At our Vidyalaya, I provide a reading environment to students from the very initial stage. I also carry out many activities through the library to enhance students' knowledge and skills, which I find

very helpful in their learning of other subjects.

Reading programmes

I conduct reading programmes from Class III to Class VIII throughout the year. Under this programme, I divide the class into three categories based on their reading fluency in Hindi and English. I also provide children with books according to their interests to help improve their reading skills.

To make this initiative more effective, I have also initiated parental involvement to help children pick up reading fast. I motivate students to read at least one story in English or Hindi everyday. I also encourage them to read magazines and newspapers, which help them gain knowledge and inculcate reading habits.

To further increase the reading habit among students, I provide e-books and guide them to utilize the National Digital Library website.

Book Review

Book review is one of the key features of our school library. Through this programme, I invite students' opinions on the books they read. Students from Class IX to Class XII participate in this activity. I have observed that this programme helps students improve their analytical skills and language abilities.

Library Events

To promote reading habits, I conduct various activities in the library throughout the year. Some of these include book exhibitions, Reading Month, storytelling sessions, Pustakophar, class library initiatives, library quizzes, birthday celebrations of eminent personalities in the fields of science, freedom fighters, and writers, and the celebration of other special days. Reading programmes are also integral to the morning assembly, which I carefully plan and integrate.

By implementing these strategies, I strive to create a healthy and friendly environment in the Vidyalaya that encourages students to learn and grow by using the School Library to the fullest.

Nandan Kumar Dubey
TGT Librarian
PM SHRI KV Madhupur

"Libraries are not just about books. They are about ideas, innovation, and inclusivity."

~Narayana Murthy (Founder of Infosys)

530-539 (PHYSICS)
540-549 (CHEMISTRY)
570-576 (BIOLOGY)

613 (PERSONAL HEALTH & SAFETY)
ORIGAMI/IMO/PENCIL SHADING
793 (GAMES AND SPORTS)

16
बढ़ने के लिए पढ़ना

विषय: पढ़ाई की आदत को बढ़ावा देना
प्रोजेक्ट का नाम: रीड टू ग्रो (पढ़ाई कार्यक्रम)
कक्षा: कक्षा 6 से 9
संसाधन: पुस्तकालय की पुस्तकें (ऑफलाइन)
ऑनलाइन संसाधन: पार्थम स्टोरी वीवर (बहुभाषी कहानियों का डिजिटल भंडार)
https://storyweaver.org.in/en/

विचार/रणनीतियाँ:
केन्द्रीय विद्यालयों के पुस्तकालयों में पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने का उद्देश्य पढ़ाई को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा तथा आनंददायक बनाना है, जो छात्र अनिच्छुक पाठक हैं, उन्हें नियमित और आजीवन पाठक में परिवर्तित करना। इस उद्देश्य के लिए "रीड टू ग्रो" नामक एक पठन कार्यक्रम की शुरुआत की गई , जिसे मेरे द्वारा सफलता पूर्वक चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम में कई ऐसी गतिविधियाँ शामिल हैं, जो पाठकों और पुस्तकों के बीच की खाई को पाटती हैं।
यह कार्यक्रम प्रत्येक शैक्षिक सत्र की शुरुआत में लॉन्च किया जाता है, इसका लक्ष्य कक्षा 6 से 9 तक के अनिच्छुक पाठकों को ऑनलाइन और ऑफलाइन किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना है। "रीड टू ग्रो" कार्यक्रम छात्रों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से प्रोत्साहित करता है, जिनमें शामिल हैं: कहानी सुनाना/कहानी का घंटा, रीडिंग बडीज़/रीडिंग पेयर, किताब उपहार में देना और दोस्त पाना, स्टोरी मैप्स, पेंट ए स्टोरी, समर रीडिंग चैलेंजेस: 40 दिन 40 कहानियाँ, पैडलेट पर वर्तमान पठन सामग्री को पोस्ट करना (जिसे "मैं अब क्या पढ़ रहा हूँ" कहा जाता है), पसंदीदा पात्र से कहानी का अभिनय करवाना, "लेट्स कुक अप स्टोरी", मिस्ट्री बैग में किताबों का वितरण, जो पढ़ने के लिए उत्सुकता को बढ़ाता है, और "ड्रॉप एवरीथिंग एंड रीड" (DEAR)।

पुस्तक प्रदर्शनी
महत्वपूर्ण दिनों और महान व्यक्तित्वों की जयंती पर पुस्तक प्रदर्शन की व्यवस्था नियमित रूप से पुस्तकालय में की जाती है, ताकि हर पाठक को अपनी पसंदीदा किताब मिल सके। "हम भी आपके पुस्तकालय में हैं" (पुरानी किताबों के लिए) और "हम नई हैं, हमसे दोस्ती करें" (नई किताबों के लिए) ये रणनीतियाँ हैं, जो सही किताब को सही पाठक से मिलाने में मदद करती हैं।

पढ़ने की आदत को विकसित करने और सूचना साक्षरता कौशल को सुधारने , छात्रों और शिक्षकों के लिए एक रीडर्स क्लब भी स्थापित किया गया है। इसके अतिरिक्त, पुस्तक क्लब का गठन भी विद्यालय स्तर पर किया गया है, जो अधिक गंभीर पाठकों को एक मंच प्रदान करता है, ताकि पढ़ाई के प्रति प्रेम को प्रोत्साहित किया जा सके।जिससे संचार कौशल में सुधार हो, विचारों को साझा करने का अवसर मिले, और मित्रों के साथ अच्छे संबंध बनाए जा सकें। एक वार्षिक गतिविधि योजना तैयार की गई है, जो छात्रों में पढ़ाई की आदत को बढ़ावा देने के उद्देश्य को पूरा करती है।

पुस्तक सप्ताह, पढ़ाई माह, और राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह जैसे उत्सवों का आयोजन पुस्तकालय द्वारा प्रत्येक शैक्षिक सत्र में किया जाता है, ताकि पढ़ाई के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाई जा सके।

एक और प्रथा जो पढ़ने की भूख को पूरा करती है, वह है पुरानी किताबों की नीलामी, जिन्हें नॉमिनल दरों पर पुस्तक-प्रेमियों के लिए बेचा जाता है।

ये पठन कार्यक्रम न केवल पढ़ने की आदत को बढ़ावा दिया हैं, बल्कि छात्रों में अन्य आवश्यक कौशल जैसे रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच, संचार कौशल और नैतिक मूल्यों को भी विकसित किया हैं, जो उन्हें जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनने में मदद करते हैं।

कृष्णा रोशन
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केवी बीएसएफ कैंप, छावला

"पुस्तकें सत्य के मंदिर हैं और पुस्तकालय उनके पवित्र स्थल।"
~राजा राव

17

Inspire to Aspire
A Biography Reading programme

The school library of **PM SHRI Kendriya Vidyalaya Ottapalam** is my portal to different dimensions, a hub of knowledge, and a haven for those who seek wisdom in the written word. It combines different languages, genres, and cultures—an island of peace and silence. It's a place where my students connect with the past, learn in the present, and dream of the future. This sacred space continues to be a beacon of enlightenment in our school.

For me, librarianship is not only about promoting reading among students but also about using their reading habits as a stepping stone to greater heights. One such exciting initiative that I've introduced in our library is the **Biography Reading Programme—'Inspire to Aspire'.**

This programme is my way of nurturing a passion for learning and inspiring our students to aspire for greatness. Through it, I allow students to explore the life stories of remarkable individuals through biographies and autobiographies. I have seen how it arouses the spirit of enquiry, the spark of curiosity, the thirst for knowledge, and the desire for creative expression.

Through this programme, my students develop a deeper understanding of history and personal growth and experience the transformative power of human experiences. I guide them to choose a biography or autobiography from the library, gather additional information from various sources, and create a **scrapbook-style project report**, which we proudly display in the library.

I encourage students to delve deeper into the lives and legacies of their chosen personalities. Under my guidance, they seek information from a variety of sources and develop research skills that I believe will serve them well in the future.

The scrapbooks my students make are more than just assignments; they are heartfelt tributes to individuals who have left an indelible mark on history. I witness how this transforms them into little historians, writers, philosophers, scientists, and artists.

Anitha P G
TGT Librarian
PM SHRI KV Ottapalam

"A library is a sanctuary where the silence speaks in many voices — voices that teach, heal, and transform."

~Anita Desai

18

पुस्तकालय प्रबंधन में नवाचार कार्यक्रम

आजकल सूचना, प्रसार एवं नई प्रौद्योगिकियां बहुत तेजी से उभर रही है। विद्यार्थियों की बेहतरी के लिए विद्यालय पुस्तकालय में भी नवाचार का प्रयोग अनिवार्य हो गया है। नवाचार विचारों को प्रस्तुत करने और शिक्षार्थियों को पुस्तकालय की ओर आकर्षित करने हेतु मेरे द्वारा पुस्तकालय में कुछ नवोन्मेषी प्रयोग लागू किए गए हैं जो पुस्तकालय प्रबंधन में ज्ञान का अभिन्न अंग है।

1. हैंगिंग पुस्तकालय -यह प्राथमिक कक्षाओं के लिए बनाया गया है। कहानी की किताबें, चंपक, मैजिक पोट, चंदा मामा आदि पत्रिकाएं कक्षा की दीवार पर 2 कीलों की सहायता से रस्सी पर लटकाई गई है। कक्षा पुस्तकालय कालांश ,दोपहर का भोजन अवकाश, खेल कालांश और मनोरंजन दिवस (फनडे) के दौरान छात्र किसी भी समय इन्हें पढ़ सकते हैं। इससे निरंतर पढ़ने की आदत विकसित होती है। महीने के अंत में सभी पत्रिकाओं को बदलकर नई पत्रिकाओं को स्थान दे दिया जाता है।

2. पुस्तकालय ब्लॉग-
https://librarykvmahoba.wordpress.com
इसकी सहायता से विद्यार्थी ई-पुस्तकें, ई-सामग्री और अध्ययन के उपयोगी लिंक पढ़ते हैं इससे पाठकों का समय बचता है।

3. पुस्तकालय ई-ग्रंथालय 4.0 के माध्यम से पंजीकृत सदस्य पुस्तकालय के बारे में सभी विवरण खोज सकते हैं साथ ही पुस्तकों की सूची , संग्रह, निर्गत दिनांक और वापसी विवरण और पुस्तक भविष्य के लिए आरक्षित कर सकते हैं। पुस्तकालय के क्रिया-कलापों का प्रत्येक सदस्य को ईमेल पर संदेश जाता है, जिससे पुस्तकालय

के सभी क्रियाकलापों की जानकारी प्रत्येक सदस्य को रहती है।

4. सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म -पर पुस्तकालय को बढ़ावा देने के लिए यूट्यूब और व्हाट्सएप ग्रुप जैसे प्लेटफार्म का उपयोग भी मेरे द्वारा किया जाता है

5. मेरे द्वारा पाठक क्लब-विद्यार्थियों में पढ़ने की आदतें विकसित करने के लिए इस क्लब का निर्माण किया गया है। इसी के अंतर्गत छात्रों के बीच पुस्तक समीक्षाएं लिखना, कहानी लिखना , अखबार पढ़ना और बुकमार्क बनाना आदि विभिन्न गतिविधियां कराई जाती हैं।

6. कुछ भी चुने और पढ़ें गतिविधि-एक नई रोचक गतिविधि जो कि पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने के लिए बहुत प्रभावित गतिविधि है , मेरे विद्यालय के विद्यार्थी इसमें उत्साह पूर्वक प्रतिभागिता करते हैं। इस्तेमाल की हुई कोई भी चीज जैसे बिस्किट रैपर , चाय के पैकेट, चॉकलेट रैपर, रेलवे टिकट को पुस्तकालय की कॉपी में चस्पा कर तीन बार पढ़ने के लिए कहा जाता है। यह बहुत प्रभावी एवं ज्ञानवर्धक गतिविधि है।

यह सभी नवीन विचार मेरे द्वारा विद्यालय की पुस्तकालय में क्रियान्वित किए गए हैं। इनके प्रयोग से विद्यार्थी हमेशा पुस्तकालय की ओर आकर्षित होते हैं। वह नई नई पठन सामग्री को पढ़ना चाहते हैं और वे स्वतंत्र रूप से पठन सामग्री तक पहुंच सकते हैं। अध्ययन सामग्री ऑफलाइन के साथ-साथ ऑनलाइन भी उपलब्ध कराई गई है।

मोहिनी प्रजापति
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री के.वि. महोबा (उ०प्र.)

"पुस्तकालय मानवता की विचारधारा का संग्रहालय है, जहाँ शब्द अमर हो जाते हैं।"

~ मैथिली शरण गुप्त

19

वेब-आधारित अनुप्रयोगों का निर्माण और उपयोगिताएँ

केंद्रीय विद्यालय संगठन, आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मुंबई का "लाइब्रेरी मीडिया सेंटर" विभिन्न प्रशिक्षण गतिविधियों का एक केंद्रीय निकाय है एवं पुस्तकालय के अनुप्रयोगों मे वेकलेट प्रोफाइल, वेबलॉग, मोबाइल पर लाइब्रेरी, ई-न्यूज़लेटर, ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग शामिल किए गए हैं। इनके प्रयोगों से बहुमूल्य समय की बचत होती है। उपलब्ध संसाधनों का संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है, जिनसे देश भर से आए हुए प्रशिक्षणार्थी एवं शिक्षक भरपूर लाभांवित होते रहते हैं।

केंद्रीय विद्यालय संगठन, आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मुंबई के पुस्तकालय मे वेब आधारित अनुप्रयोग -

1. डिजिटल रिपॉजिटरी: डिजिटल रिपॉजिटरी **ऑनलाइन** व्यवस्था हैं जहाँ ई-बुक, जर्नल और मल्टीमीडिया जैसी डिजिटल सामग्री संग्रहित और एक्सेस की जा रही है।

इंटरैक्टिव यूजर इंटरफेस: इसके द्वारा उपयोगकर्ता की सहभागिता और भागीदारी को बेहतर बनाने मे सहयोग मिल रहा है।

ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग: ऑनलाइन डिजिटल कैटलॉग द्वारा उपयोगकर्ता किसी भी स्थान से आसानी से पुस्तकों – पत्रिकाएं आदि की खोज और आरक्षित कर सकते हैं। ई-ग्रंथालय लाइब्रेरी प्रबंधन सॉफ़्टवेयर 4.0 के माध्यम से ऑनलाइन पहुँच सुनिश्चित की गई है। **एनआईसी के नवीनतम ब्राउज़र-आधारित एप्लिकेशन ई-ग्रंथालय 4.0** के साथ लाइब्रेरी स्वचालन - आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मुंबई में सब्सक्राइब किया गया और क्षेत्रों के पुस्तकालयों को अपडेट करने के लिए प्रेरित किया गया। (लिंक संलग्न)

https://eg4.nic.in/kvs/OPAC/Default.aspx?LIB_CODE=KVSZIET

2. कुशल संसाधन प्रबंधन

• **लाइब्रेरी प्रबंधन प्रणाली (एलएमएस)**: इन्वेंट्री प्रबंधन, संचालन और कैटलॉगिंग को सुव्यवस्थित करके मैनुअल श्रम को कम करके उत्पादकता मे वृद्धि की गई है।

• **स्वचालित सूचनाएँ**: उपभोक्ताओं को आगामी घटनाओं, आरक्षणों और नियत तिथियों के बारे में स्वचालित रूप से याद दिलाकर उपयोगकर्ता संचार को बढ़ाया गया।

• **आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मुंबई लाइब्रेरी मीडिया सेंटर का वेबलॉग**

यह वेबलॉग उपयोगकर्ताओं को अध्ययन सामग्री, प्रशिक्षण सामग्री, कार्यशाला की झलकियाँ, प्रेरण पाठ्यक्रम, इन-सर्विस पाठ्यक्रम, समाचार पत्र, वीडियो, चल रहे और हाल के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में जानकारी पहुचाने में मदद प्रदान करने हेतु बनाया गया है। वेबलॉग का यूआरएल है:

https://zonalinstituteofeducationtechnology.blogspot.com/

• **वेकलेट प्रोफ़ाइल**

wakelet.com/@RajeshSharmakvbilaspur

https://wakelet.com/wake/ai6eT60MwyNZeaoiMA03h

यह प्रोफ़ाइल उपयोगकर्ताओं को एक क्लिक पर संस्थान की विभिन्न गतिविधियों तक पहुँचने में सक्षम है। इनमें प्रेस क्लिपिंग-'संस्थान खबरों में', थीम आधारित वर्चुअल लाइब्रेरी, निपुण लाइब्रेरी, 100 दिन का रीडिंग अभियान, आरटीआर-संसाधनों के माध्यम से संशोधन, ऑनलाइन-ऑफ़लाइन क्विज़, शिक्षक संसाधन,

राष्ट्रीय कार्यक्रमों का उत्सव, लाइब्रेरियन दिवस का उत्सव, पुस्तकालय सप्ताह शामिल हैं।

• सोशल मीडिया आधारित एप्लीकेशन - फेसबुक और ट्विटर

https://x.com/ZIETMUMBAI

https://www.facebook.com/zietmumbai/

3. डेटा विश्लेषण

• **उपयोगकर्ता डेटा विश्लेषण**: पैटर्न, प्राथमिकताएँ और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों को खोजने के लिए इन अनुप्रयोगों द्वारा डेटा का विश्लेषण करके डेटा-संचालित निर्णय लेने में मदद मिली।

लाभ

1. **बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव**: हमारे पुस्तकालय के उपयोगकर्ता वेब-आधारित अनुप्रयोगों से अधिक संतुष्ट हैं क्योंकि ये संसाधनों और अनुकूलित सेवाओं तक आसान पहुँच प्रदान कर रहे हैं।

2. **परिचालन दक्षता**: इससे सटीक एवं व्यापक रूप से जानकारी की पहुँच सुनिश्चित हुई हैं।

3. **डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि**: एनालिटिक्स उपयोगकर्ताओं के व्यवहार और संसाधनों के उपयोग के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने और रणनीतिक योजना बनाने में सफलता मिली है।

4. **समय की बचत**: इन अनुप्रयोगों से उपयोगकर्ताओं को अपना बहुत उपयोगी समय बचाने में मदद मिली।

चुनौतियाँ

1. **कार्यान्वयन की लागत**: बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी में एक बड़ा प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता पड़ी।

2. **डेटा सुरक्षा और गोपनीयता**: उपयोगकर्ता के लिए डेटा सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है और इसके लिए मजबूत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता पड़ी।

3. **प्रशिक्षण और सिस्टम अनुकूलन**: पुस्तकालय कर्मचारियों को नई तकनीकों का कुशलतापूर्वक उपयोग और प्रबंधन करने के लिए सार्थक प्रशिक्षण कार्यक्रम कराया जाता है।

केंद्रीय विद्यालय संगठन, आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान मुंबई का लाइब्रेरी मीडिया सेंटर वेब-आधारित अनुप्रयोगों को एकीकृत करके कई लाभ प्रदान करता है, जैसे कि बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव, प्रभावी संसाधन प्रबंधन और डेटा-संचालित निर्णय लेना। इन पुस्तकालय अनुप्रयोगों से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एनसीएफ अगस्त 2023 और केंद्रीय विद्यालय संगठन दिशा-निर्देशों को प्रभावी ढंग से संचालित करने मे सहायता प्राप्त हुई।

संदर्भ

1. केंद्रीय विद्यालय संगठन (2015)। "स्कूल लाइब्रेरी और प्रक्रियात्मक मैनुअल के लिए दिशानिर्देश।" नई दिल्ली: केवीएस।

2. डॉ. सिंह, संगीता और शर्मा, राजेश (2019)। स्कूली छात्रों की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और गुणवत्तापूर्ण परिणामों को बढ़ाने के लिए लाइब्रेरी 2.0 का अनुप्रयोग: केवी बिलासपुर क्लस्टर परिप्रेक्ष्य के केंद्रीय विद्यालय। जर्नल ऑफ लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी (जेएलआईसीटी)। खंड 8(2), 84-92 पृष्ठ।

3. डॉ. राय, प्रदीप, डॉ. सिंह, संगीता और डॉ. शर्मा, राजेश (2021, 27-28 सितंबर)। महामारी के दौरान ऑनलाइन लाइब्रेरी सेवाओं के माध्यम से पढ़ने की आदतों को बढ़ावा देना: केवी बिलासपुर के संदर्भ में एक अध्ययन [सम्मेलन प्रस्तुति]। गुलबर्गा विश्वविद्यालय पुस्तकालय, कलबुर्गी कर्नाटक, सार्वजनिक पुस्तकालय विभाग, कर्नाटक सरकार, कल्याण कर्नाटक, लाइब्रेरियन एसोसिएशन कलबुर्गी, कर्नाटक राज्य एससी/एसटी, लाइब्रेरी प्रोफेशनल्स एसोसिएशन बैंगलोर द्वारा भारतीय पुस्तकालय संघ के सहयोग से आयोजित भारतीय पुस्तकालय संघ का 66वां वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन। 2021, नई दिल्ली। आईएसबीएन 9788185216533

4. डॉ. शर्मा, राजेश। कोविड-19 महामारी के दौरान छात्रों के लिए ई-लाइब्रेरी सेवाओं का उपयोग: केवी बिलासपुर के संदर्भ में एक अध्ययन। पुस्तकालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय सम्मेलन सामाजिक विज्ञान और प्रबंधन संघ सेल, जबलपुर यूआईजेएमएसआर खंड 3(2), 2021 आईएसएसएन 25818872 प्रभाव कारक 4.8

5. केसी, एम. ई., और सावस्तीनुक, एल. सी. (2007)। लाइब्रेरी 2.0: अगली पीढ़ी की लाइब्रेरी के लिए सेवा। लाइब्रेरी जर्नल, 131(14), 40-43।

संलग्न: यूआरएल और चित्र

https://zonalinstituteofeducationtechnology.blogspot.com/

https://eg4.nic.in/kvs/OPAC/Default.aspx?LIB_CODE=KVSZIET

wakelet.com/@RajeshSharmakvbilaspur

https://100daysreadingcampaignkvbilaspur.blogspot.com/

सोशल मीडिया आधारित एप्लीकेशन - फेसबुक और ट्विटर

https://x.com/ZIETMUMBAI

https://www.facebook.com/zietmumbai/

डॉ. राजेश शर्मा
प्रशिक्षण सहयोगी (पुस्तकालय)
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मुंबई

"पुस्तकालय उस समाज का दर्पण होते हैं जो सीखना और आगे बढ़ना चाहता है।"

~डॉ. ज़ाकिर हुसैन

20

पुस्तकालयाध्यक्ष का अनोखा कार्य

जीट मैसूर में पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में पुस्तकालयों/संस्थान की बेहतरी के लिए निम्नलिखित गतिविधियां/कार्य किए गए:

हमारी तेजी से बढ़ती डिजिटल दुनिया में, साइबर सुरक्षा और संरक्षा के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता है। हमारे द्वारा साइबर सुरक्षा और संरक्षा और विभिन्न गतिविधियों पर जीट संकाय सदस्यों के लिए लगभग एक वर्ष के लिए मासिक सत्र आयोजित किया गया ताकि वर्तमान साइबर स्पेस में नवीनतम जोखिमों और समस्याओं से संकाय सदस्यों को जागरूक किया जा सके। सूचना संरक्षक के रूप में, पुस्तकालयाध्यक्षों , प्राचार्यों और पीजीटी (कंप्यूटर साइंस) आदि कर्मचारी संवेदनशील डेटा की सुरक्षा और शैक्षणिक संस्थानों के भीतर उचित ऑनलाइन व्यवहार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः "साइबर सुरक्षा और संरक्षा " पर एक व्यापक कार्यशाला आयोजित की गई। जिसके अंतर्गत पुस्तकालयाध्यक्षों और अन्य कार्मिकों को डिजिटल युग की जटिलताओं से सुरक्षित करने के लिए आवश्यक कौशल और जागरूकता पर विस्तार से चर्चा इस तरह से की गई कि साइबर स्पेस की संस्कृति को बढ़ावा देते हुए यह सुनिश्चित किया जा सके कि हमारा केंद्रीय विद्यालय उभरती चुनौतियों और खतरों के खिलाफ सुरक्षित और संरक्षित रह सके।

- **ज्ञान के संरक्षण के लिए जीट मैसूर में पुराने मुद्रित ई-मैनुअल और अध्ययन सामग्री की व्यवस्था और वर्गीकरण :**

जीट मैसूर में पूर्व मुद्रित ई-मैनुअल और अध्ययन सामग्री का पर्याप्त संग्रह है, हमने इसे व्यवस्थित और वर्गीकृत करके संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन किया तथा ये संसाधन प्रशिक्षण और सीखने के लिए आवश्यक अंतर्दृष्टि और मूलभूत ज्ञान प्रदान करते है, समय के साथ सामग्री की प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए इन सामग्रियों की उचित व्यवस्था और वर्गीकरण के कारण प्रशिक्षण सत्रों में इन सामग्रियों का उपयोग करना काफी सुविधाजनक एवं लाभदायक हो जाता है। अतः प्रशिक्षकों और प्रतिभागियों के लिए सामग्री की प्रासंगिकता और सुसंगतता सुनिश्चित करना मेरा प्रमुख उद्देश्य है।

- **प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों एवं विभिन्न गतिविधियों के प्रचार प्रसार के लिए ब्लॉग और सोशल मीडिया की शक्ति का उपयोग करना:**

जीट मैसूर के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों और अन्य गतिविधियों के लिए प्रकाशित सामग्री के व्यापक प्रचार के लिए ब्लॉग और सोशल मीडिया के प्लेटफॉर्म का उपयोग पर्याप्त रूप से किया जाता है। ब्लॉग और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म लोग सिर्फ देखते ही नहीं अपितु जुड़ाव महसूस करने लगते है ,यह नेटवर्किंग की सुविधा भी प्रदान करते हैं,तथा उपलब्धियों और संसाधनों को प्रदर्शित करने के लिए एक गतिशील स्थान भी प्रदान करते हैं।

आज की पारस्परिक दुनिया में, गतिविधियों और प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को बढ़ावा देने के साथ-साथ प्रकाशित सामग्रियों के प्रचार- प्रसार के लिए प्रभावी संचार आवश्यक है। अतः ब्लॉग और सोशल मीडिया का एकीकरण सबसे प्रभावशाली उपकरणों में से एक है।जिसकी सहायता से इन सभी सामग्रियों को निरंतर सभी तक पहुँचाने में इसका बहुमूल्य योगदान है।

- **सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाने में ई-मैनुअल और डिजिटल अध्ययन सामग्री के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना :**

जीट मैसूर में प्रशिक्षण प्रतिभागियों के लिए डिजिटल संसाधनों की पर्याप्त व्यवस्था की जाती है। यह ई-मैनुअल और डिजिटल अध्ययन सामग्री की उपलब्धता अधिक आकर्षक और प्रभावी बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। पुस्तकालय सेवाओं के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक प्रारूपों का लाभ उठाकर, इन सामग्रियों के व्यापक प्रचार और पहुंच के लिए इसे वेबसाईट ब्लॉगों और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के माध्यम से उपलब्ध कराया गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में, अनुकूलनशीलता और नवाचार प्रशिक्षणार्थियों और प्रशिक्षकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जीट मैसूर ई-मैनुअल और डिजिटल अध्ययन सामग्री का डिजिटल मुद्रण लोगों तक उसकी पहुँच बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। यह इस बात को चिह्नित करता है कि शैक्षिक संसाधनों का उपयोग, संस्थान के अन्य लोगों एवं प्रशिक्षणार्थियों के मध्य साझा करने हेतु किया जा रहा है

- **शिक्षा को सशक्त बनाना: कार्यशालाओं और सेवाकालीन प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल बढ़ाना:**

(जीट मैसूर में आवश्यकता अनुसार विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए सत्र आयोजित करना)

शिक्षा के क्षेत्र में, शिक्षकों, प्रशासकों और कार्यालय कर्मचारियों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास अत्यंत आवश्यक है ताकि वे, आधुनिक एवं वर्तमान प्रौद्योगिकी से सामंजस्य बना सकें। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्यशालाएं और विभिन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन शिक्षकों को उनकी भूमिकाओं में ज्ञान, कौशल के माध्यम से उत्कृष्टता प्राप्त करने लिए किया जाता है। और यह शिक्षकों और कार्मिकों के भीतर सीखने, सहयोग और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा

देती रही हैं। इन विषयों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन एन ई पी 2020 एवं केन्द्रीय विद्यालय के निर्देशानुसार समय समय पर किया जा रहा है।

- **उत्कृष्टता को सशक्त बनाना: जेडआईईटी और अन्य केंद्र सरकार के संगठनों में इन-हाउस प्रशिक्षण सत्र:**

आंचलिक शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान मैसूर और विभिन्न केंद्र सरकार के संगठनों (क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान एनसीईआरटी, मैसूर, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, मैसूर, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर, अखिल भारतीय भाषण और श्रवण संस्थान के भीतर इन-हाउस प्रशिक्षण सत्र का आयोजन) व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने, कौशल बढ़ाने और कर्मचारियों के बीच निरंतर सुधार सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये सत्र प्रदर्शन के उच्च मानकों को बनाए रखने, नीतियों और प्रौद्योगिकियों को विकसित करने और सरकारी सेवा के विभिन्न क्षेत्रों

में उत्कृष्टता की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण होते हैं।

- **नियमित अपडेट के साथ ZIET वेबसाइटों का रखरखाव और अद्यतन:**

डिजिटल युग में, वेबसाइट सूचना, और संसाधनों के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है आंचलिक शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान मैसूर में, इसकी वेबसाइटों का रखरखाव और नियमित अपडेट न केवल सटीक और समय पर सूचना के प्रसार के लिए आवश्यक है अपितु पारदर्शिता, और लोगों तक इसकी

पहुँच भी महत्वपूर्ण है। अतः हमारे द्वारा नियमित अंतराल पर वेबसाइट के नियमित रखरखाव और अद्यतन रखने पर विशेष ध्यान दिया जाता है जोनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (ZIET) में, छात्रावास प्रभारी की स्थिति में विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारियां शामिल हैं।

- **जीट मैसूर में छात्रावास प्रभारी की अभिन्न भूमिका:**

आंचलिक शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान में, छात्रावास के प्रभारी की स्थिति में प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के निर्बाध संचालन और प्रतिभागियों की संतुष्टि के लिए पंजीकरण और कमरे के आवंटन के प्रबंधन से लेकर रखरखाव, मरम्मत और भुगतान की देखरेख तक महत्वपूर्ण हो जाता है। हॉस्टल इंचार्ज की भूमिका में पंजीकरण, कक्ष प्रबंधन, रखरखाव, मरम्मत और भुगतान संग्रह प्रक्रियाओं आदि के माध्यम से प्रतिभागी सेवाएं प्रदान करना एक सतत प्रक्रिया है। इन जिम्मेदारियों को लगन और समर्पण के साथ पूरा करके, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करने के संस्थान के मिशन में महत्वपूर्ण योगदान देना आदि जिम्मेदारियों का समुचित निर्वहन किया जाता है।

डी.के. सिंह
पुस्तकालयाध्यक्ष
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर

"यदि हमें सच्चा वैज्ञानिक समाज चाहिए, तो पुस्तकालयों को प्राथमिकता देनी होगी।"

~विक्रम साराभाई

केन्द्रीय विद्यालय, आई
KENDRIYA VIDYALAYA,
SHRI KENDRIYA
पठन
CHAMPAK
Magic Pot
चंपक

IIT INDORE
CHAMPAK

21

Pioneering Role of School Librarian in Kendriya Vidyalaya Sangathan

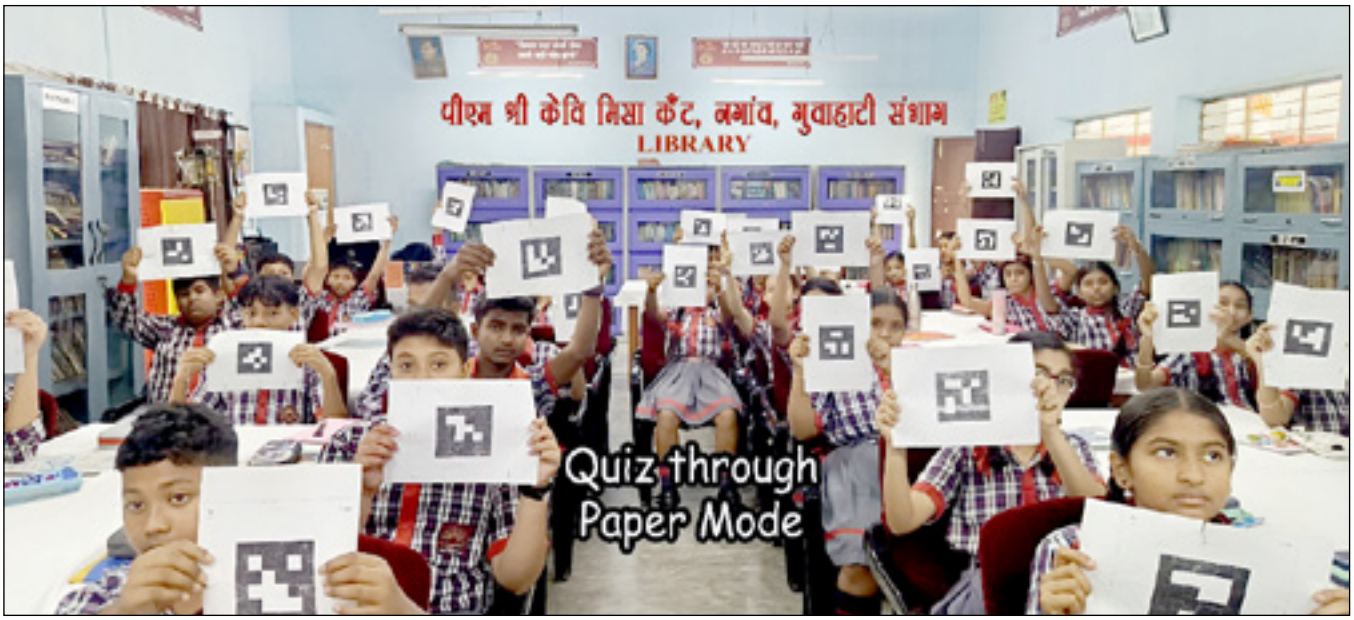

Introduction

In the ever-changing landscape of education, **my role as a librarian** has tremendously evolved from that of a traditional storekeeper to that of an information provider, which is proving to be highly fruitful for the academic setup in achieving institutional objectives. I have become a key resource in referring the correct information to cater to the educational needs of students and staff. I am no longer just a custodian solely responsible for managing and organizing a physical collection of books and periodicals; I see myself as a dynamic educator, technology integrator, able mentor, leader in information literacy, and collaborator in the academic community. I play a crucial role within the school setup by facilitating a wide range of educational resources that support teachers in effective classroom transactions and students in improving their academic performance. In this narrative, I delve into the multifaceted responsibilities I shoulder and highlight the pioneering contributions librarians like me make to educational institutions.

Key Responsibilities of Librarians in KVS

Acquisition and Management of Resources

I am responsible for organising relevant, up-to-date, and aligned physical and digital resources with the current curriculum. I acquire physical resources from renowned publishers and vendors like NBT, NCERT, Publications Division, Government of India, Pratham Books, and Katha Jharana. I also ensure subscription to journals and magazines that provide ample opportunities for students to develop reading habits through content such as stories, puzzles, crafts, and information, all of which captivate young minds. For readers like teachers and secondary students, I facilitate access to online databases and open-source journals such as DOAJ, DOAB, OPENDOAR, Springer Open Access, J-Gate, and Google Scholar, helping them critically evaluate and expand their knowledge in their respective fields. Libraries in Kendriya Vidyalayas not only offer general books, but I also strive to meet the users' needs by developing a rich collection of reference books in all major subjects, encyclopaedias, and CD/DVD collections on various topics.

Following the KVS Library Policy, I organise physical collections using the latest version of the Dewey Decimal Classification (KVS, 2014). Class numbers help in the proper shelving and retrieval of documents, which is a standard practice in most KV libraries.

Competency Development in Information Literacy

Technological advancements have increased the possibility of sharing ideas with a large audience, resulting in an explosion of information on the web. Finding the right piece of relevant, authentic, and up-to-date information is a challenge for students

and staff. I take it upon myself to make them aware of authentic sources and search strategies such as Boolean logic (AND, OR, NOT), keyword search, truncation search, phrase search, wildcard, filter search, etc., for faster retrieval of relevant resources.

I organise workshops and one-on-one sessions at the Vidyalaya level to develop competencies among students and staff in information literacy, promoting critical thinking and research skills. This awareness also helps them retrieve authentic information and stay secure from internet threats such as malware, ransomware, spyware, worms, phishing, and hacking.

Technology Integration

I take pride in integrating technology into the library for better organisation and service dissemination. I am well-versed in library automation (e-Granthalaya 3.0 & 4.0), familiar with digital library software like GSDL, E-Print, DSpace, Koha, and skilled with web tools like Quizizz, Linktree, Wakelet, blogs, Canva, and mobile apps. This integration supports wider dissemination of services and more efficient organisation of the Vidyalaya library. It also helps modernise the library, attract users, conduct engaging activities, and manage resources effectively.

Effective Collaboration in Teaching-Learning

The National Education Policy (NEP) 2020 emphasises multidisciplinary projects (MDPs), storytelling pedagogy, integrated learning, and experiential learning. Teachers are expected to assign theme-specific MDPs, and I readily collaborate with them to design and locate appropriate sources that support project completion. I also support classroom activities by providing teaching resources and helping develop instructional materials. This collaboration caters to a variety of learning needs and enhances the educational experience. I assist teachers in learning how content can be effectively delivered using storytelling methods.

Promoting Reading and Lifelong Learning

"Our highest priority must be to achieve universal foundational literacy and numeracy in primary schools by 2026-27…" (NIPUN Bharat, 2021). To achieve this goal, I take on the core responsibility of instilling reading habits among students and staff through various reading activities: storytelling, reading aloud, mass reading, treasure hunts, role-play, book talks, meet-the-author events, Face-a-Book activities, reading competitions, literary celebrations, Pustkophar, and appreciation programmes. I ensure an age-appropriate multilingual collection, create an aesthetically pleasing reading environment, provide comfortable library furniture, and maintain a supportive demeanour—all of which motivate students and staff to become regular and lifelong learners.

Advocacy and Leadership

I believe marketing is key to improving services and raising awareness about community achievements. In KVS, libraries share reading activities through newspapers and social networks like Facebook, X, Instagram, LinkedIn, blogs, and WhatsApp. This policy helps attract readers and promotes a culture of reading. My efforts in organising reading activities, coordinating with guests/authors, teachers, and students, and ensuring wide publicity demonstrate the active leadership role that I and my fellow librarians play.

Librarian: Pioneer in Educational Achievement

I firmly believe that "the library is the heart of an institution." Being centrally located, it is easily accessible to departments and

classes. Achieving institutional goals is never a one-person job — it's the result of collective efforts by staff, the hard work of students, and the support of parents and friends.

In this process, I motivate students by facilitating their educational needs. By staying updated with the latest syllabus and curriculum, understanding user interests (through User Need Assessment – UNA), and ensuring smooth services, I help implement positive logistical changes in the institution. My accountability ensures a seamless reading experience, and I take pride in contributing to institutional success and student achievement.

Conclusion

The importance of my involvement in education cannot be overstated. As a librarian, I am a trailblazer in accomplishing educational goals through my multifaceted role. My efforts help ensure that students are not only information consumers but also lifelong learners, critical thinkers, and effective communicators. As education continues to evolve, my role will remain vital in shaping the future of learning.

References

- Ministry of Education (2021). *NIPUN Bharat: A National Mission on Foundational Literacy and Numeracy.* Department of School Education & Literacy, Ministry of Education, Govt. of India. 18p.
- Kendriya Vidyalaya Sangathan (2014). *Guidelines for School library and Procedure Manual.* Kendriya Vidyalaya Sangathan: Equipping the learners for the 21st Century. 67p.

7 Types of Cyber Threats & How to Prevent Them [2022 Guide]. (2023, October 27). BlueVoyant https://www.bluevoyant.com/knowledge-center/7-types-of-cyber-threats-how-to-prevent-them-2022-guide

LIBRARY, ZIET, BBSR. (n.d.). https://libraryzietbbsr.blogspot.com/

J, N. (2023). *Must-Have Digital Tools for Smart School Libraries.* upEducators. https://www.upeducators.com/blog/must-have-digital-tools-for-smart-school-libraries/

Biswa Bag
Training Associate (Library)
ZIET, Bhubaneswar

"Libraries are cultural archives — not just of knowledge, but of struggle, dissent, and hope."

~T.M. Krishna (Cultural thinker and artist)

22

पुस्तकालयाध्यक्ष : एक विशेष भूमिका

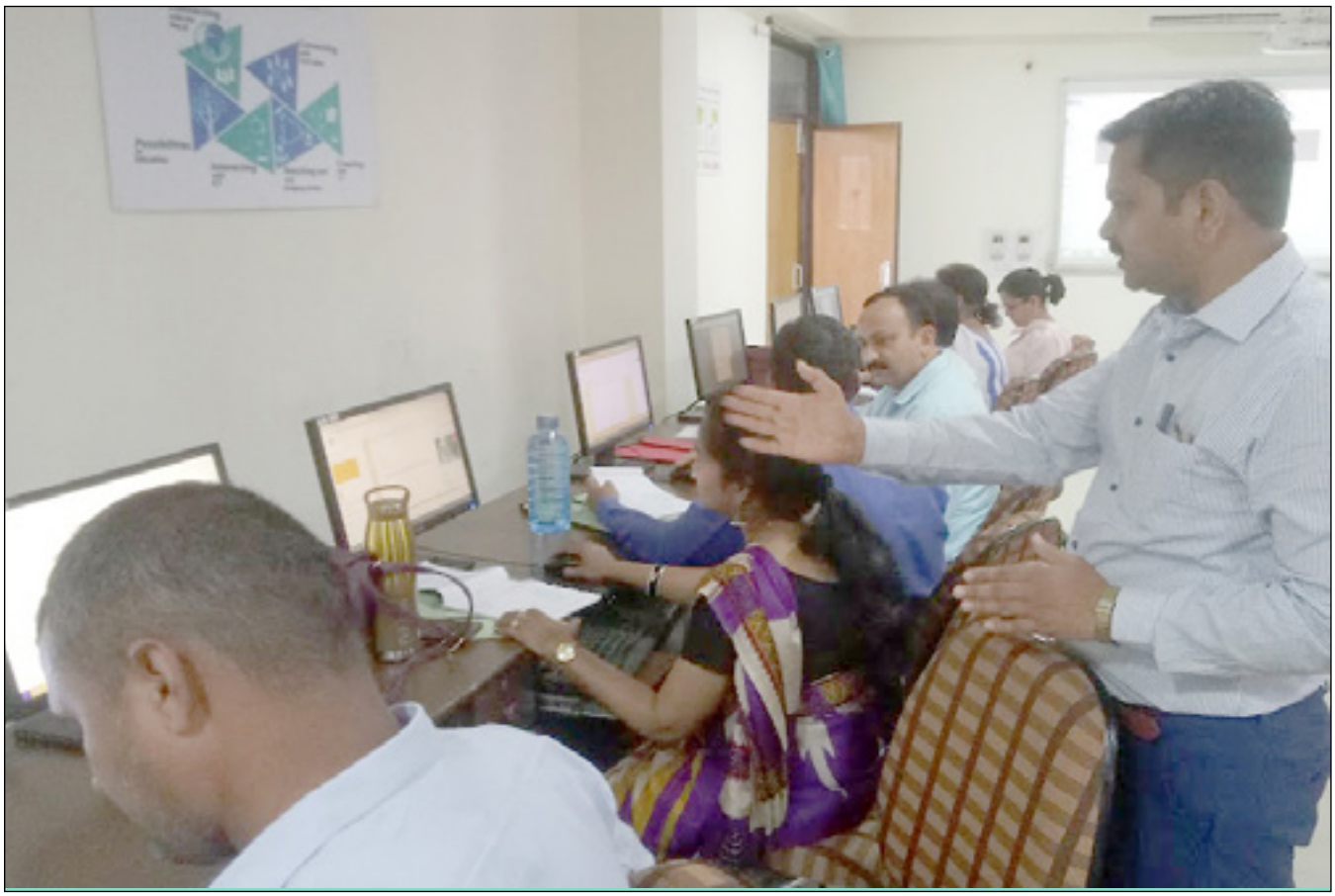

स्कूल के पुस्तकालय पुस्तकों, पत्रिकाओं, डिजिटल मीडिया और ऑनलाइन डेटाबेस सहित अन्य संसाधनों को पाठकों तक पहुंचाते है, जो पाठ्यक्रम आवश्यकताओं और व्यक्तिगत रुचियों दोनों की पूर्ति करते है। पुस्तकालय पढ़ने की आदत को विकसित करते हैं और साक्षरता कौशल को बेहतर बनाने में मदद करते हैं, जिससे छात्रों को अधिक पढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। , जिन्हें पढ़ने के लिए एक शांत जगह की आवश्यकता होती है उन सभी छात्रों के लिए पुस्तकालय एक सुरक्षित और महत्वपूर्ण स्थान है। पुस्तकालय छात्रों को नई रुचियों का पता लगाने और कक्षा से इतर अपने ज्ञान का विस्तार करने के अवसर प्रदान करके आजीवन सीखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। पुस्तकालय विभिन्न प्रारूपों, जैसे ऑडियोबुक, ई-बुक और बड़े प्रिंट वाली पुस्तकों में सामग्री प्रदान करके सीखने की विविध जरूरतों को पूरा करते हैं।

पुस्तकालय के इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मैं पूर्ण मनोयोग से इस दिशा में अपना योगदान प्रदान कर रहा हूं।

मैंने पुस्तकालय विभाग को और अधिक ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये ताकि बच्चों व शिक्षकों में पढने की आदत का विकास हो सके।

पुस्तकालय का प्रबंधन – मेरे द्वारा पुस्तकालय के प्रबंधन को नया स्वरुप दिया गया जिससे पुस्तकालय देखने में आकर्षक लगे और पुस्तकों का सही रूप से वर्गीकरण व कैटलॉग किया जिससे बच्चे आसानी से अपनी मन पसंद पुस्तकों तक पहुँच सके। **खुला एक्सेस** प्रणाली के माध्यम से बच्चों को प्रेरित किया गया कि जो भी पुस्तक उनको अच्छी लगती है उसको पढने के लिए प्राप्त किया जा सकता है।

पुस्तकालय का स्वचालन और डिजिटलीकरण- वर्ष 2006 में मेरे द्वारा यह महसूस किया गया कि पुस्तकालय की सेवाओं को विस्तार देने के लिए कार्यों में ICT का प्रयोग करना नितांत आवश्यक है उस समय पुस्तकालय से सम्बन्धित सॉफ्टवेयर आसानी से उपलब्ध नहीं थे। उन्होंने एक ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर " Library Manager" के माध्यम से अपने पुस्तकालय का ऑटोमेशन किया इसका लाभ बच्चों को मिलने लगा। वर्ष 2008 में NIC द्वारा निर्मित ई- ग्रंथालय 3.0 सॉफ्टवेयर केंद्रीय विद्यालय में प्रचलन में आया और मैंने इस सॉफ्टवेयर का भरपूर प्रयोग किया व अपने देहरादून संभाग का मास्टर ट्रेनर बना। मैं इस संबन्ध

में अन्य पुस्तकालय अध्यक्षों की भी सहायता करता रहा हूं। मेरा हमेशा से यही प्रयास रहा कि पुस्तकालय के क्षेत्र में समय की मांग के अनुसार नई- नई तकनीकों का उपयोग किया जाए ताकि 21 वीं सदी के बच्चों की मांग को आसानी से पूरा किया जा सके। ई- ग्रंथालय 4.0 के माध्यम से डिजिटल लाइब्रेरी को बनाने का कार्य चल रहा है, जिसका बच्चे व शिक्षक 24 x7 प्रयोग कर सकते है।

पढने की आदत को विकसित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन – बच्चों व शिक्षकों में पढने की आदत को विकसित करने के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का संचालन मेरे द्वारा किया गया जैसे- अपना समान्य ज्ञान बढाओं , पुस्तक उपहार दिवस, Quiz Programme, पुस्तक प्रदर्शनी, पुस्तक समीक्षा, Read Aloud, Word Hunt, Drop Everything and Read, Wall Magazine, Hanging Library, Dictionary Game, Poster Making competition, Word Hunting, Gift a Book Get a Friend आदि। हमने हर आयु वर्ग के बच्चों के लिए अलग अलग कार्यक्रम तैयार किये और बच्चों ने काफी उत्साह के साथ इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

के.वि. सर्कुलर कोष (KV Circular Repository) - के.वि. के शिक्षकों व कर्मचारियों की मदद के लिये एक ऑनलाइन के.वि. सर्कुलर कोष को बनाया गया जिसमें पुराने व नये जारी सर्कुलर वर्गीकरण के आधार पर रखे गये है , प्रयोग करने वालों ने 3,80,000 (तीन लाख अस्सी हजार) से ज्यादा बार इनको देखा है।

विभिन्न टूल्स व तकनीक के माध्यम से पुस्तकालय की सेवाएँ – पुस्तकालय की सेवाओं को और अधिक विस्तार देने के लिए मैंने विभिन्न प्रकार के टूल्स व तकनीक का प्रयोग किया जिसमें **लाइब्रेरी ब्लॉग, लाइब्रेरी न्यूज़ लैटर, लाइब्रेरी ऑन मोबाइल** आदि शामिल हैं।

कोरोना काल में बच्चों को डिजिटल लर्निंग कंटेंट प्रदान करना – कोरोना काल में शिक्षा को जारी रखने के लिये हमने इन्टरनेट की अलग अलग साईट पर उपलब्ध विभिन्न विषयों के लेक्चर को एक जगह पर सहेजकर बच्चों को डिजिटल लर्निंग कंटेंट उपलब्ध कराए। जिसमें कक्षा तीन से कक्षा 12 तक के सभी विषयों के सभी चेप्टर के लेक्चर, प्रश्न उत्तर, वर्कशीट, करियर गाइडेंस, व अन्य गतिविधियों आदि को बच्चों तक पहुंचाया गया। इनको प्रयोग करने वालों ने इन कंटेंट को 6 लाख से ज्यादा बार प्रयोग किया। पुस्तकालय की इस सर्विस से बच्चों को काफी लाभ मिला।

शिक्षकों को ट्रेनिंग देने में योगदान – मैं लगभग 13 साल से ट्रेनिंग से जुड़ा हूं। लगभग 13 बार 21 दिवसीय इन- सर्विस कोर्स, 25 कार्यशालाओं को आयोजित करने में अपनी भूमिका निभाई। मेरे द्वारा संसाधक, समन्वयक,सह-कोर्स निदेशक के रूप में कार्य किया। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लगभग 650 से ज्यादा पुस्तकालय अध्यक्षों को ट्रेनिंग प्रदान कर चुका हूं। मेरे द्वारा किये गये कार्यों के देखते हुए SCERT चंडीगढ़ व NVS NLI अमृतसर ने मुझे कई बार लेक्चर हेतु आमंत्रित किया है।

अक्सर यह देखा गया है कि देश के विभिन्न केन्द्रीय विद्यालय के पुस्तकालय अध्यक्षों को यदि कभी कोई ई- ग्रंथालय सॉफ्टवेयर संबंधी व अन्य समस्या आती है तो वे मुझसे संपर्क करते है और अपनी समस्या का निदान प्राप्त करते हैं।

सुनील कुमार
के.वि.सं आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
चंडीगढ़

"दुनिया में जो भी ज्ञान प्राप्त हुआ है, वह मन से ही आया है; ब्रह्मांड की अनंत लाइब्रेरी हमारे अपने मन में है।"

~स्वामी विवेकानंद

23

पठन अभिरुचि बढ़ाने हेतु अभिनव प्रयोग

केन्द्रीय विद्यालय पुस्तकालय और पुस्तकालयाध्यक्ष का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य छात्रों में पठन अभिरुचि की अभिवृद्धि करना और उन्हें आजीवन पाठक बनाना है। पठन अभिरुचि का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि यह व्यक्ति की रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच को बढ़ाती है। संचार कौशल, एकाग्रता और पढ़ने की क्षमता में सुधार करती है। शब्दावली एवं ज्ञान अभिवृद्धि करती है। मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करती है और तनाव को कम करती है। छात्रों की पठन अभिरुचि अभिवृद्धि हेतु मेरे द्वारा निम्नलिखित अभिनव पद्धतियों को प्रयुक्त किया जा रहा है -

1. **प्रार्थना सभा में पुस्तक समीक्षा वाचन:-**

पुस्तकालय से संबंधित विभिन्न गतिविधियाँ जैसे- सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, पुस्तक प्रश्नोत्तरी, लेखक वार्ता आदि सप्ताह के एक निश्चित दिन प्रार्थना सभा में आयोजित की जाती हैं जिससे छात्र पुस्तकालय के बेहतर उपयोग के लिए प्रेरित होते हैं।

छात्रों की पठन अभिरुचि अभिवृद्धि हेतु एक नूतन प्रयोग के अंतर्गत प्रार्थना सभा में पुस्तक समीक्षा वाचन किया जा रहा है जिसका विवरण निम्न प्रकार है-

पुस्तकालय कालांश के दौरान विद्यार्थियों को उनकी पसंद की पुस्तकें घर पर पढने हेतु निर्गत की जाती हैं और उन्हें पुस्तकों की समीक्षा लिखने हेतु निर्देशित किया जाता है। मेरे द्वारा साप्ताहिक रूप से प्राप्त समीक्षाओं में से एक सर्वश्रेष्ठ पुस्तक समीक्षा का चयन किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ समीक्षा लिखने वाला विद्यार्थी प्रार्थना सभा में सप्ताह के एक निश्चित दिन अन्य छात्रों के समक्ष अपने द्वारा लिखित पुस्तक समीक्षा का वाचन करता है और दूसरा विद्यार्थी समीक्षा वाचन के दौरान समीक्षा की गई पुस्तक को श्रोता विद्यार्थियों को दिखाता है। यह अभ्यास अन्य विद्यार्थियों को पुस्तक पढ़ने को प्रेरित करता है।

2. **पुस्तक समीक्षा प्रदर्शनी-**

पुस्तक समीक्षा पुस्तकों को अधिक दृश्यता प्रदान करती है तथा अधिक पाठकों द्वारा पठन हेतु लिए जाने की अधिक संभावना प्रदान करती है। समीक्षा पाठकों को अपने विचार अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है। यह समीक्षाकार छात्रों के लिए अनेक प्रकार से महत्वपूर्ण हो सकती है, जिसमें- छात्रों को पढ़ने में संलग्न होने में मदद करना, लेखन कौशल विकसित करना, छात्रों को अपनी पसंद निश्चित करने में मदद करना, छात्रों को उनके विचारों पर मनन करने में मदद करना आदि शामिल हैं। पुस्तक समीक्षा अन्य पाठकों के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि यह पाठकों को यह तय करने में मदद करती है कि उक्त पुस्तक उनकी अभिरुचि अनुसार है या नहीं, साथ ही उन्हें पुस्तक की विषय-वस्तु, शैली, प्रस्तुतीकरण और

गुणवत्ता के बारे में एक झलक दे सकती है।

मेरा मत है कि केन्द्रीय विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्षों को विद्यार्थियों को पुस्तक समीक्षा के महत्व के बारे में जागरूक करना चाहिए तथा उन्हें पढ़ी गई पुस्तकों की समीक्षा लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। छात्रों को यह भी बताया जाना चाहिए कि समीक्षा कैसे लिखनी है। मेरे द्वारा पुस्तक के पूर्ण विवरण के अलावा, कुछ महत्वपूर्ण पहलू जैसे- पुस्तक ने अपने लक्ष्य को कितनी अच्छी तरह प्राप्त किया है, पुस्तक द्वारा क्या संभावनाएँ सुझाई गई हैं, विषय से संबंधित आपके क्या व्यक्तिगत अनुभव हैं आदि को भी शामिल किया है। छात्रों को अपनी समीक्षा को आकर्षक और प्रेरक बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

एक निश्चित समय अंतराल (जो तीन या चार महीने हो सकता है) के पश्चात् प्राचार्य की अनुमति से चयनित पुस्तक समीक्षाओं की प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। प्रदर्शनी के लिए समीक्षाओं का चयन पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा समिति की अनुशंसा से किया जाता है। पुस्तक समीक्षा प्रदर्शनी देखने के लिए विद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों को आमंत्रित किया जाता है। जिन छात्रों की समीक्षाएँ प्रदर्शनी के लिए चुनी जाती है, वे निश्चित रूप से गौरवान्वित महसूस करता है एवं भविष्य में भी श्रेष्ठ पुस्तक समीक्षा लिखने हेतु प्रेरित होगा साथ ही अन्य छात्र भी अच्छी पुस्तक समीक्षाएँ लिखना सीखेंगे। यह अभ्यास सभी छात्रों को अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ने और अच्छी पुस्तक समीक्षाएँ लिखने के लिए प्रेरित करता है, जो निश्चित रूप से उनकी पठन अभिरुचि में अभिवृद्धि करता है।

डॉ. योगेश कुमार जैन
सह-प्रशिक्षक (पुस्तaकालयाध्यक्ष)
आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ग्वालियर

"पुस्तकालय किसी राष्ट्र की रीढ़ होते हैं। पुस्तकालय कोई विलासिता नहीं, बल्कि जीवन की एक आवश्यकता है।"

~डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम

पुस्तकालय विद्यालय की प्रज्ञा है
'पढ़ते-लिखते' लोगों की जीवंत संज्ञा है,
यह आईना है हमारी प्रबुद्ध परंपरा का
प्रतिबिंब है ज्ञान के प्रति अटूट श्रद्धा का,
करीने से सजी ये किताबें सभ्यता की रूप-रेखा हैं
मेधा को समर्पित संस्कृति का झरोखा हैं,
बच्चों के बहुरंगी दृष्टिकोण की धनक हैं
खोज और अन्वेषण की चमक हैं,
चर्चा – परिचर्चा हैं, बहस और मुबाहिस हैं
इक संसार जहाँ तथ्य पे कल्पना क़ाबिज़ है।

~ऋतु पल्लवी
सहायक आयुक्त (प्रशि.)

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Kendriya Vidyalaya Sangathan

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016

18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ